... अति चाप्पा ... (विधि ...)
...ऽत्र संन्यासो द्विधा ... यल्लिंग
लिंगविभागतः तयोरलिंगसंन्यासो ...

अथ संन्यासः॥ संन्यासके लक्षण

तत्र ब्रह्मचर्यं कृत्वा समावर्तनानन्तरं कृ-
दारः॥ पुत्रानुत्पाद्य यज्ञैरिष्ट्वा वानप्र-
स्थक्रमेण च कृत्वा संन्यसेदित्याश्रमसमुच्च-
यपक्षः॥ ब्रह्मचर्यादेव प्रव्रजेद् गृहाद्
वा॥ श्रुतिरप्याह॥ यदहरेव विरजे-
त् तदहरेव प्रव्रजेदित्याश्रमविकल्पप-
क्षः॥ प्रव्रजेद् ब्रह्मचर्याद्वा॥ प्रव्रजेच्च गृहाद्
वा॥ वनाद्वा॥ आतुराणां च संन्यासे
विधिर्नैव च क्रिया प्रैषमात्रं समु-
च्चार्य संन्यासं तत्र कारयेत्॥ प्रैषमन्त्र-
मं ओं संन्यस्तं मया ... है॥ संन्यासे
... रूपे विविदिषो विप्र-
स्यैवाधिकारः॥ विद्वत्संन्यासे तु त्रै-
वर्णिकस्यापि॥ कलियुगे संन्यास-
निषेधः त्रिदण्डसंन्यासपरः॥ इ-
ति प्राच्यः स च संन्यासश्चतुर्धा कु-
टीचको॥ बहूदको॥ हंसः॥ परमहंस

~~[illegible]~~
~~[illegible] ... संन्यासे तु ...~~

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

...कांच ... परमहंस ... कः॥ तू पातातोन ... ह.त...
छिद्वावः स्थूल ... टनु॥ निर्णय ॥ यैवे दण्ड क.मा.॥

तत्रो त्तरसोभेछः॥ वहिकुस्वीजह्देवाद
त्रिकाषा॥ वासा॥ त्रिदण्ड शिखायज्ञोप
वीतवान् वेष्ठु भजहे भवाभजानः॥ प्र
भनिष्ठो॥ वेतसकुटीचकः॥१॥ प्रत्रादीन्
किंचासमागारोमो मे दोवरनपुवो. कां
वस्त्रादिवेषत्रान् बहूदकः॥२॥ हंसस
वोकिवेषो पि एकदण्डः॥ परमहंसस्तु॥ शिखा
ज्ञोपवीतहीनः॥ एकदंडी स्यात् कौपायवस्त्र वे
चतुर्णामपि॥ हंसपरमहंसयोः शिखायज्ञो
सत्वोऽस्त्वाभ्यां भेदः॥ एकदंड सद्भ यो
॥ परमहंसस्य दण्डधारण विविदि द
कोर्थ्ये ज्ञान दक्षायां॥ विद्वता दक्षायांतु॥ वि
ध्यायांतु कृता कृतम्॥ न दण्डं न शिखां नो
चं चरति॥ परहंसः इति प्रवणात्॥ वे...
...ज्ञानेनो नाजीव नाद्यर्थं संन्यासेत नर
कः॥ एकदण्डं समाश्रित्य जीवन्ति वहवो
नराः॥ नरके रौरवे घोरे कर्मत्यागात्पतन्ति ते॥१॥ अथ
संन्यासग्रहणविधिः॥ तत्रोत्तरसवर्णं प्रभू...॥
आतुरस्य दहिणं पनमपि॥ और वी पद्धति
संन्यासग्रहण की इस ग्रन्थ में कही है पत्र॥
८३॥ ८४॥ ८५॥ ८६॥ ८७॥ पर॥ अथ आतुर
संन्यासः पत्र ८८ पर है॥ अथ मृतयति संस्कारः॥
पत्राद्रि पौवास्ना त्वा वयर्न कु चैत्रं चाधी
सार्थम कुर्यात् पत्रातिरिक्तस्य व

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

पाशत्तिजानि यान्निवैते ... धिः कृतिमाह : स्मृति
... तथः स्फुटमू ।। निर्वेदमालएा यायात्मन्ने जे ...

नैकताकृतम पत्र ८८ पर म...
न्यासी का संस्कार अत्रिचिह्न तक ... है
है ।। जले स्थले वा समाधिं तैकुर्यात ...
तनाम समाधि देने का है परमहंस ...
ले समाधि मे रक्खा: ।। जले मध्यम: नदी ...
पतिने कहित ।। प्रेतसक्रियां न कुर्यात ...
मे सिंधुपत्र ३ ।। उत्री कुप. ८८ ।। ६ ।। ६०० ।। ...
हनन का लिखे है गरुड पुराण मे भी और ...
...श्वर पद्धति मे भी और पाराशर ...
स्मृति मे और माधवादिक ग्रन्थों ...
और माधवादि धर्मशास्त्र मे संन्यास धर्म को निर्णय विस्तार
से लिखा है ।। गरुड पुराण मे संन्यासी के दाह का नि
षेध लिखा है ।। उक्तं च ।। हंस परमहंस कुटीचक
बहूदको न दाहेन संन्यासिन सर्वे चापि पिपीलि
न पैन्म तान् ।।१।। और भी धर्मसिंधु याज्ञवल्क्य
स्मृति मे यति धर्म वर्णित है ।। अथ प्रसंगाद्यति
धर्मा: पत्र ६१ प्रातरुत्थाय प्रक्षालए स्पते ... ते
पवित्र दणा ... निमित्त द ... परी ... गृ
ह स्थ चतुर्गुण शौचं कुर्यात ।। आचम्य ।। पर्व
द्वादशी वर्जं प्रणवेन दंतधावनं कार्यम् ।। स
र्वं प्रणवेन कार्यम् ।। अत्र विशेषो माधवादौ वि
श्वेश्वर पद्धत्यादौ च ज्ञेय: ।। अथ भिक्षा काल

... पद्मापत्रा लक्ष्मि दत्ता ... ककाः किले ।। ...त्रि
... न मानवं द ... नाति ... काधिकारितास्त तपत्र

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

[illegible] ... ना नावर्णस्य ... [illegible] ... विप्राः ... [illegible]
... लिङ्गधारणम् ... ज्ञातो ... ज्ञातानां नापंथ मेंविधीयते ...

विधूमे सन्न मुसले व्यंगारे भुक्त वज्जने कालेऽपरे
हे भूयिष्ठे नित्यं भिक्षां यतिश्चरेत ॥ भिक्षा मे दाय
यातरे त्रेधाः ॥ ज्ञानिव तिको भिक्षा माधुकरी मुख्य
है सप्तवा पञ्च गृह से भिक्षा लेनी इसी नो मा
धुकरी मुख्या ॥ पंचभ्यः सप्तभ्यो वा गृहेभ्यो भि
क्षां याचेत ॥ प. ६२ ॥ पर यह वाक्य है ॥ एकरात्रं
वसेद् ग्रामे नगरे पंचरात्रकम् वर्षाभ्योऽन्य
त्र वर्षासु मासांश्च चतुरो वसेत ॥ अष्टौ मा
सान् विहरस्या द्यतीनां संयतात्मना
महत्क्षेत्रं प्रविष्टानां विहारस्तु न विद्यते ॥ भि
क्षाटनं जपं स्नानं ध्यानं शौचं सुरार्चनम्
कर्तव्यानि षडेतानि सर्वथा नृपदंडवत् ॥
पञ्ज्ञा
मंचकं शुक्लवस्त्रं च स्त्रीकथा लौल्यमेव च
दिवास्वापं च यानं च यतीनां पतनानि षट् ॥
वृथा जल्पं पात्रलोभं संचयं शिष्यसंग्रहं
हव्यं कव्यं तथान्नं च वर्जयेच्च सदा यतिः ॥ अ
थ यतिपात्राणि ॥ मृद वेणु दार्वलाबु मयानि
चेति चत्वारि पात्राणि ॥ मृत्तिका का १ वेणु वांस
का २ ॥ दारू काष्ठ का ३ ॥ अलाबु तुंबा ४ ॥ यह
पात्र यति के है चार ॥ नतीर्थवासी नित्यं स्यान्नोप
वास परो यतिः एते संक्षेपतो यतिधर्माः ॥ अन्ये

[illegible]

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

प्रान्त्य वृ याज्ञवल्क्य: ॥ ... वृकाके पुत्र ...
क्या: तोय नाम पिता की भगिनी का सु के पुत्र का नाम है ... भतीजा ...
... ॥ १५ ...

... प्रमाणं स्याद् ... श्रुति: का तत्र नादर: १ पृ० ...
... जहां श्रुति: ... लिखा ... का प्रमाण है ॥ जहां
... है तहां श्रुति अनादर है श्रुति प्रमाण नहीं
... है ...

3

... भी है ॥

... तेधा ... धा धातु से क प्रत्यय हुआ है ॥ ... प्रते
... ॥ इति ... ॥
... फल ... कर्म सुधीपते ऽ ... इति ... ॥
... होरहा ...

... का ... पुं० वाचि शब्द है ॥ परमं ब्रह्म ... पति ॥
... श्रुति ... जानाति वा इति परमर्षि ... गतौ ॥ ...
... परस्मात् परमार्षि ... सात: ... इति निरु ...
... ॥ संन्यासि में देख ॥ ... पहले ...
... वेतरि ॥ संन्यासि में देख ॥ ...

... अर्जुन का ॥ ... पृथा ... ऽपत्य ...
... नाम युधिष्ठिर का ॥ ...
पार्थ ... पुं० वाचि० ऽपत्य ... ऽस्त्र ...
... राजा का है ॥ पृथिव्या: ईश्वर: पार्थिव:
पार्थिव नाम राजा का है ॥ पृथिवी के विकार का नाम भी है पार्थिव ॥
पुं० वाचि० ॥ पृथ्वी के विकार का ... ॥ जो ... मय ... पारि ...
पारि ... काल ... शब्द ... ॥ परित: पार्श्व वे० ॥
... ष न ... मान ॥ परित: पार्श्वे वे० ॥
तो वे ... ॥ पर ... वा ... धातु से

... कन ... कहे ॥ पर ... ॥
पिण्याक नाम खल का है ॥ ... न० लि० पुं० वाचि० ॥ ... होता है
... क ... प्रत्यय ... है ...

... गमने धातु से ... परे ... ति ... तं ... नमा
... ऽद ... ... तो ... ... रो
... ... सम्बन्ध ... ... ॥ प्रवर्तनात् ... न्यो विधि
... ... है ॥ ...
... ... सब ... तः

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

...प्रकार की भीति-ह ॥
...प्रदात्री ... धात्री
...त्रिया ॥ प्रमोष देवतापत्नी
पितुः पत्नी ॥ कन्यका ... और भी
भी मातायें लि. है गुरुपत्नी से
प्रारंभ करके इस प्रकार १६
लि. है ॥

भूमि का ... है ॥ भवन्ति ...
तानि प्रख्यां साम्प्रतं ॥

ऋग्वेद सोम मे अक्षौहिणी संख्या लि. है

२१ सहस्त्र ८ सौ ७ गजाः

२१ सहस्त्र ८ सौ ७० रथाः ॥

६५ सहस्त्र ६ सौ १० अश्वा ॥

१ लाख ९ सहस्त्र ३ सौ ५०
पयादे

जोड २ लाख १८ सहस्त्र ७
सौ यह जोड है

यह पांच सोम मे लि. है

अमरकोश २ का० श्लो० ८०
मे अक्षौहिणी संख्या यह है

२ लाख ५३ सहस्त्र ८ सौ यह
संख्या लि. है ॥

एकेभैकरथा त्र्यश्वा पत्तिः पंच
पदाति का पत्ति ... सेनामुखं ...
पादः त्र्यश्वा पत्ती ... २ अमरकोश

अग्नि आभोमान ...
... तेज ...
अग्नि तेज से ...
... जल ...

ग्न्य च्च याज्ञवल्क्यः॥ वैखानसेनाश्रमेण स्याक्रमाः स्वाश्र
मितिचोदिताः चान्नियस्य त्रयः प्रोक्ता वैश्यस्य
पाः॥ विप्रो तरैव र्णैः संन्यासं नैव चाप्नुयुः॥ चतुर्दश्यां

पिमाधवीय मिताक्षरादौ ज्ञेयाः॥ चातुर्मास्ये
ध्येतु वपनं वर्जयेद्यतिः॥ वपनं मुंडनम्॥ याज्ञव
ल्के तृतीयोध्याये॥ वनवासं कृत्वा तत्र समनन्त
र मोक्षे मनः कुर्यात् वनगृहं शूद्रस्यांतक्से
वंधाश्रमो लक्षते मोक्षपूर्वेन च मोक्षे कुफ
लकः चतुर्थाश्रमः॥ अथ च गार्हस्थ्याद
नंतरं मोक्षे मनः कुर्यादनेन च पूर्णे ते
चतुराश्रम समुच्चय पक्षः॥ पाक्षिकु इ
द्योतयति पक्षान्तर विकल्पो जाबाल श्र
तौ श्रूयते ब्रह्मचर्यं परिसमाप्य गृ
ही भवे गृही भूत्वा वनी भवेद्वनी भूत्वा
प्रव्रजेत्॥ यदि वा इतरथा ब्रह्मचर्यादेव प्र
व्रजेत् गृहाद्वा वनाद्वा अस्मिन् चाश्रमे ब्रा
ह्मणस्यैवाधिकारः॥ आग्नेयीं समा
रोप्य ब्राह्मणः प्रव्रजेत् गृहात्॥ ब्राह्मणः प्र
व्रजतीति श्रुतेः अग्रजन्मनः एवाधिकारे
न द्विजातिमात्रस्य॥ अन्येतु त्रैवर्णिका
नां प्रकृतत्वात् त्रयाणां वर्णानां वेदमधी
त्य चत्वारः आश्रमाः इति सूत्रकार व
चनात् द्विजातिमात्रस्याधिकार माहुः

4

परमहंसस्य द्वौ नैव विधीयते॥ एक एव सत्त्रेद्रसेद्ग्रा
म नगरे पंचरात्र क॥ एकान्ते तत्र यीत॥ त्यजेद्दुधि
रवच्चाज्य मेक स्पान्न च मासव त

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

किस को कहते हैं ॥ त्रिदंडमस्यास्तीति
त्रिदंडी त्रिदंडा प्रस्य संतीति त्रिदंडी ॥ वा
दंडो थमनो दंडः कर्मदंडश्च ते त्रयः
यस्येते नियता दंडाः स त्रिदंडीति कथ्यते
ते दंडः वैणवः ग्राह्यः ॥ दंडी किसको
कहते हैं ॥ दंडमस्यास्तीति दंडी ॥ संन्यासी कृ
नकारेण न्यासः संन्यासः ॥ संन्यासो वि
द्यते यस्य सः संन्यासी ॥ प्रकर्षेण वने
तिष्ठतीति वनप्रस्थः वनप्रस्थ एव वा
नप्रस्थः संज्ञायां दीर्घः ॥ ब्रह्मचर्यम
स्यास्तीति ब्रह्मचा[illegible]री ॥ कृतदारपरि
ग्रहे गृहस्थः ॥ गृहप्राधान्यस्य दारपर
त्वात् ॥ मनुस्मृतिमे लिखा है अध्या
य ६ श्लोक ८९ ॥ सर्वेषामपि चैतेषां श्रुति
स्मृति विधानतः गृहस्थ उच्यते श्रेष्ठः स त्री
नेतान्बिभर्ति हि ॥ १ ॥ इति संन्यासधर्माः ॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

रजःस्वलादि दो
वे पूजादि का निर्णय
कार्तिक कृष्ण पंडउपवासादिके कार्य — द्वितीयपरि॰ पत्र॰ ११॥१५०

धर्मसिंधु प्रथमपरिच्छेद पत्र २५ पूर्णिमावतनिर्णय॥ सर्वापौर्णमासीकुलधर्मादौ पूर्वा ग्राह्या ते॥

और वाक्य पूर्वविद्धा के वा और परविद्धा के वी है परन्तु उपवासादिक मे तो पूर्वविद्धा ती को मुख्य माना है॥ देखो आवणी और फा॰ शु॰ १५ होलिका पूर्णिमा पूर्वविद्धा लिखी है॥ आषा॰ १५ मा प्रदोषव्यापिनी लिखी है॥ भा॰ १५ आश्विन में तो १५ पूर्वविद्धा ग्राह्या॥ यह लिखा है॥ कार्तिक शुक्ला १५ पूर्णिमा पौर्णमासी ग्राह्या लिखी है॥ मार्गशीर्ष शुक्ला १५ प्रदोषव्यापिनी ग्राह्या यह पत्र ५६।५७ पर धर्मसिंधु पं॰ २ मे है वाक्य एक माघकी पूर्णिमा और चैत्र वैशाख की उपर की १५ के निर्णय मे यह विचार है के परविद्धा कही है सो यह वाक्य निर्मूल है क्यु के सर्वा पौर्णमासीकुलधर्मादौ उपवासादे पूर्वा ग्राह्या ते यह ही वाक्य को मुख्य मानते पूर्वविद्धा ही करणी उपवास मे॥ जो ज्ये॰ शुक्ला १५ मे चतुर्दशी प्रदोष व्यापिनी का जो वचन है सो पूजा दानादि पर है उपवास पर नही है सावित्री व्रत के वी ना परा ग्राह्य है यह वाक्य वी न हो

इस प्रकार की कृष्ण धर्मसिंधु मे लिखा है पं॰ २६ पर दूर्वा का वी पातकर की उपवास प्रतरमे ग्रहण है

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

होलिका वायुफल॥ होलिका निर्णय॥ होलिका पूजन॥ यह सब भी निर्णय सिन्धु की कापी मे है॥ पत्र दसप्रारम्भ है॥

३३ श्री देवता है नव दुर्गा है ये॥

त्रयस्त्रिंशत् कोटयः देवाः॥ नव कोटयः दुर्गाः॥ यजुर्वेद रुद्र मे लि॰ है॥ सदाशिवगणाः सर्वे स्थानं स्थानं जलैः सह त्रैलोक्ये त्रयस्त्रिंश कोटि संख्या यथा भवेत्॥ ३३ कोड़ देवता और नव दुर्गा यह यजुर्वेद रुद्र खण्ड मे लि॰ है॥
३३ देवता और नव दुर्गा इनका प्रमाण वृहदारण्यक उपनिषद मे लि॰ है॥ स होवाच महिमान एवैषामेते त्रयस्त्रिंशत्वेव देवा इति कतमे ते॥ अष्टौ वसवः एकादश रुद्रा द्वादशादित्याः॥ एक इन्द्र एक प्रजापतिः यह ते तीस ३३ देवता है॥ अथ वसु नामानि॥ अग्नि १ पृथिवी २ वायु ३ अन्त॰ रि॰ द्यौ ४ आदित्य ५ द्यौ ६ चन्द्रमा ७ नक्षत्र ८ यह वसु ८ है॥ नव दुर्गा यह है शैलपुत्री १ ब्रह्मचारिणी २ चन्द्रघण्टा ३ कूष्माण्डा ४ स्कन्दमाता ५ कात्यायनी ६ कालरात्रि ७ महागौरी ८ सिद्धिदात्री ९ यह नव दुर्गा है॥
दश प्राण यह है॥ प्राण १ अपान २ व्यान ३ समान ४ उदान ५ नाग ६ कूर्म ७ कृकल ८ देवदत्त ९ धनंजय १० यह है॥ यह सब यजुर्वेद मे भी लिखे है॥

जाति का वर्णन
ब्राह्मणो जातिः अष्टाध्यायी का सूत्र है॥ समान प्रसव आत्मिका जातिः की साथ सम्बन्ध है॥ महाभाष्य॥ पर समान आविष्टलिङ्गा जातिः॥ [illegible] व्याख्या मे सविस्तार से लिखे है॥

एकादशी षष्ठी अष्टमी पूर्णमासी चतुर्दशी अमावस्या तृतीया उ [illegible] एकादशी कृ [illegible] पर्वसु॥ एकादशी की पूर्वा सुपरान्विता॥१॥ यह वाक्य वी लिखा है॥ पर च॥ अष्टमी शुक्ल पक्ष की व कृष्ण पक्ष की परान्वित करनी॥ अष्टमी शुक्ल पक्ष की कृष्ण पक्ष की पूर्वविद्ध करनी [illegible] तादिक मे परान्वित करनी कृष्ण पक्ष की अष्टमी शुक्ल पक्ष की [illegible] ती पाप छवी व्रतादिक मे [illegible] परान्वित करनी॥ [illegible] [illegible] वित करनी॥ [illegible] के व्रतादिक मे [illegible] करनी [illegible]॥
CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

सकृत् जलपानेन नोपवासः प्रणश्यति ॥ एक बार जल पीने से व्रत नहीं नशता है ॥ बहुत बार के पीने से दिन में शयन करने से दिन में रात्रि में मैथुन करने से व्रत नष्ट हो जाता है ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ धर्मसिन्धुपरिच्छेदे २ पत्र ६६

फाल्गुनी पौर्णमासी मन्वादि ॥ सापौर्वह्नि कोऽप्य (भद्रारहिता)
मेव होलिका ॥ सा प्रदोषव्यापिनी ग्राह्या ॥ दिने
द्वये प्रदोषव्याप्तौ ॥ परदिने प्रदोषैकदेशव्याप्तौ वा
परैव ॥ पूर्वदिने भद्रादोषात् ॥ परदिने प्रदोष
स्पर्शाभावे ॥ पूर्वदिने प्रदोषे भद्रासत्त्वे ॥ यदि
पूर्णिमा परदिने सार्द्धत्रियामा ॥ ततोऽधिका वा
तत्परदिने च प्रतिपद्वृद्धिगामिनी तदा परदिने प्र
तिपदि प्रदोषव्यापिन्यां होलिका ॥ उक्तविषये यदि
प्रतिपदो ह्रासस्तदा पूर्वदिने भद्रापुच्छे वा भद्राम
खमात्रं त्यक्त्वा ॥ भद्रायामेव होलिकादीपनम् ॥
परदिने प्रदोषस्पर्शाभावे पूर्वदिने यदि निशीथा ॥
प्राक् भद्रसमाप्तिस्तदा भद्रावसानोत्तरमेव हो
लिकादीपनम् ॥ निशीथोत्तरं भद्रासमाप्तौ भद्रामुखं
त्यक्त्वा भद्रायामेव प्रदोषे भद्रामुखव्याप्तौ भद्रोत्तरं प्र
दोषोत्तरं वा ॥ दिनद्वये पूर्णिमायाः ॥ प्रदोषस्पर्शाभा
वे ॥ पूर्वदिने राव भद्रापुच्छे तदलाभे भद्रायामेव प्र
दोषोत्तरमेव होलिका ॥ रात्रौ पूर्वार्द्धे भद्रायाः

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

...त्यचोक्ते ॥ नातु पूर्वं प्रदोषे भद्रे चतुर्दश्यां नवाप
र... स्नायाज्ञायौ ॥ दिवा होलिका दीपनं [illegible]
य विरुद्धम् ॥ इयं होलिकापूजनं श्रवणकर्म
देवं कुर्को पिबन्ति ॥ अतश्चैतत्र ॥ केचित्तु हो
लिकापूजनं कृत्वा भुंजते ॥ तेषां भोजनस्य पू
र्वनस्य वाननियमेन शास्त्रविहितकाललाभः ॥
दे चन्द्रग्रहणसत्वे वेधमध्ये पिकार्थः ॥ ग्र
...ोदये परदिने प्रदोषे पूर्णिमासत्वे ग्रहणम
ध्याववकार्थम् ॥ अन्यथा ॥ पूर्वदिने भद्राम खपुच्छ
न चारणम् ॥ पूर्णिमायां भद्रायाः तृतीयपादान्तेध
टित्रयं पुच्छम् ॥ चतुर्थपादाद्य घटि पञ्चकं मुखम्
तथाच ॥ मध्यममानेन षष्टिघटीमितायां पूर्णि
मायां पूर्णिमाप्रवृत्त्युत्तरं सार्द्धैकोनविंशतिघटि
कोत्तरं घटित्रयं पुच्छम् ॥ सार्द्धद्वाविंशतिघटिको
त्तरं घटिपञ्चकं मुखम् ॥ तिथेः चतुःषष्टिघटि
मितत्वे पूर्णिमायाः एकविंशतिघटिकोत्तरं पुच्छ
म् ॥ चतुर्विंशतिघटिकोत्तरं मुखम् ॥ एवं तिथेः

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

मानानारेप्वधमम् ॥ निर्णयसिंधुग्रंथे फाल्गुना
निर्णये द्वितीयपरिच्छेदे ॥ फाल्गुनी पौर्णमासी
होलिका ॥ सा च सायाह्नव्यापिनी ग्राह्या ॥ सायाह्ने
होलिकां कुर्वीत पूर्वाह्णे क्रीडनं गवां ॥ इति वचना
त् ॥ इति निर्णयामृते उक्तम् ॥ प्रदोषव्यापिनी ग्रा
ह्या पौर्णमा फाल्गुनी सदा ॥ तस्यां भद्रामुखं त्य
क्त्वा पूज्या होलिका निशामुखे ॥ इति नारदवच
नात् ॥ प्रदोषव्यापिनी सुक्तम् हेमाद्रौ ॥ पूर्वविद्धा
कर्तव्या ॥ उक्तं च ॥ श्रावणी दुर्गनवमी दूर्वा चै
व हुताशनी पूर्वविद्धा प्रकर्तव्या शिवरात्रिर्वले
र्दिनम् ॥ इति व्रध्मभ्रलवेवर्तीकेष्य ॥ दिन
द्वये प्रदोषव्याप्तौ परैव ॥ पूर्वदिने भद्रासत्वात्
तत्र च होलिकानिषेधात् ॥ तदुक्तम् निर्णयामृते
॥ भद्रायां द्वे न कर्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा श्राव ॥
णी नृपतिं हन्ति ग्रामं दहति फाल्गुनी ॥१॥ दिना
र्द्धे सरताऽपि स्यात् फाल्गुनी पौर्णिमा यदि रात्रौ भ
द्रावसाने तु होलिका दीप्यते तदा ॥२॥ यदा तु पूर्व
दिने चतुर्दशी प्रदोषव्यापिनी परदिने पूर्णिमाऽस्त
पः सायाह्नात् प्रागेव समाप्यते तदा पूर्वदिने सम्पू
र्णरात्रौ भद्रासत्वात् ॥ तत्र च तन्निषेधात् परदिने

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

प्रतिपद्येव कुर्य्यात् ॥ साद्धयामत्रयं चास्यात् द्वि
तीयद्दिवसे यदा प्रतिपद्वर्धमाना तु तदा सा हो
लिकास्मृता ॥ इति भविष्यवचनाद्दत्तिनिर्णय
म्येतत्कारः ॥ मदनरत्नेप्येवम् ॥ यत्तु वन्हौ वह्निप
रिसंगात् ॥ वन्हौ होलिकायां वह्निप्रतिपदं वर्जयेत्
तु पद्यः ॥ प्रदोषव्यापिनी न स्याद्यदा पूर्वेद्दिने तदा ॥
प्रमुखं वर्जयित्वा होलिकायाः प्रदीपनम् ॥ इति
नारदवचनात् ॥ निशागमे प्रपूज्येत होलिका स
र्वदा बुधैः ॥ न दिवा पूजयेत्तुंढिं पूजिता दुःखदा
भवेत् ॥ इति दिवोदासीयवचनात् ॥ यामत्रयोर्ध्व
ता चेत्प्रतिपत्तु भवेत्तिथिः भद्रामुखं परित्यज्य कार्य्या हो
लामनीषिभिः ॥ इति विद्याविनोदेऽभिधानात् ॥ भद्राम
खं विहाय पूर्वेद्दिने रात्रौ कार्य्येत्याहुः ॥ अथ परेद्यु
रस्तोदयपश्चात् पूर्वेद्दिने भद्रावर्जं रात्रिचतुर्थया
मे विष्टिपुच्छे वा होलिका कार्य्या ॥ अहोरात्रं प्रति
पत्त्वात् तत्पूर्वेद्दिने होलिकानिषेधात् ॥ परे
ने प्रदोषे पौर्णमासी सत्वे कर्मकालस्पर्शे चतुर्थयामा
दिजो राकालं ग्रहणमानाभावात् भद्राभावाच्च ॥ अ
रणकाले होलिका कार्य्या ॥ कालमाधवेऽप्येवं च ॥ य
दि च पूर्वेद्दिने चतुर्दशी प्रदोषव्यापिनी परेद्दिने पू
र्णिमासा पाताल राजेन्द्र समाप्यते तदा पूर्वेद्दिने

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

सम्पूर्णरात्रौ भद्रासत्वात्तन्निषेधात्परेहनि
निपद्येव कुर्यात् ॥ इति ठक्कुराः ॥ न नन्दापूजयेत्तु ठां
पूजिता दुःखदा भवेत् ॥ इति निषेधसत्वापि ॥ परेद्यु
र्वैदिने भद्रापुच्छे कार्य्यम् पद्यविधिरन्ते कार्य्यम्
भाषा ॥ न नन्दा पूजयेत्तु ठां यह वो वाक्य लिखे है पर च
स्वेद न पुच्छ को धरित्र यमें जो पूजन न जाहां तक हो वे
या भद्रा के अवसान में होवे तो प्रतिपदा में पूजन करण
करतां अष्ट नहीं है ॥ अथ होलिका पूजाविधिः ॥
प्रथमं स्वस्तिवाचनं कृत्वा ॥ ततः संकल्पं कुर्वा देशकालौ
संकीर्त्य ॥ अमुक अमुक गोत्रा वयं सर्वे पौ नगरनि
वासिनां गृहे सुखानन्द प्राप्त्यर्थं तथा च ढुण्ढा राक्षसी
प्रीत्यर्थं तत्कृत पीडा परिहारार्थं च होलिका पूजनमहं
करिष्ये ॥ तदङ्गत्वेन तन्निर्विघ्नपरिसमाप्त्यर्थं च आ
दौ गणपत्यादिदेवान्यथोपचारैः पूजयिष्ये ॥१॥
अहान्स्गपीता ॥ ऋडुकानां काष्ठानां गोमयपिंडानां
राशिं कृत्वा वह्निना प्रदीप्य ॥ तत्र अस्माभिः भयसंत्रस्तैः
कृत्वा त्वं होलिके यतः । अतः त्वां पूजयिष्यामि भूते
भूतिप्रदा भव ॥ इति पूजामंत्रेण ॥ ओं होलिकायै नमः
॥ होलिकां आवाहयामि इत्यावाह्य ॥ होलिकायै नमः
इति मंत्रेण पाद्याद्यादि यथोपचारान् दत्वा अर्घं समर्पया
मि होलिकायै नमः ॥ गन्धपुष्पादिभिः पूजयेत्
॥ ततः प्रार्थना मंत्रः ॥ वन्दितासि सुरेन्द्रेण ब्रह्मणा शं
करेण च । अतस्त्वं पाहि नो देवी भूते भूतिप्रदा भव ॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

ति प्रार्थयेत् ॥ तमग्निं त्रिः परिक्रम्य ॥ आपं तु च हसं
ते ॥ जन्म तु स्वच्छ आलोकाः त्रामाघ हि ... ल्लिकाम्
तिं दीपयेत् ॥ इति होलिका पूजाविधि समाप्ता ॥
अथ होलिकाधूमफलम् ॥ पूर्वे वायौ होलिकायाः
प्रजाभूपालयोः सुखम् ॥ पलायनं च दुर्भिक्षं दक्षि
णे जायते ध्रुवम् ॥ पश्चिमे तृणसंपत्तिरुत्तरे
धान्यसंभवः यदि खे च शिखा वृद्धि दुर्गं ... रा
ष्ट्रं पि संत्यजेत् ॥ इति होलिका निर्णयः ॥ अथ श्रा
वणी निर्णयः धर्मसिंधौ द्वितीयपरिच्छेदे पत्र १६
उपाकर्म काल ॥ सर्वशाखिनां गृह्योक्तकर्मम
काल चैन निर्णीते गृहे ग्रहण संक्रान्त्यावास
त्वे संक्रान्ति रहितं पञ्चम्यादयो ग्राह्याः ॥ ग्रहण
संक्रान्ति योगश्चोपाकर्म संबंधि अहोरात्रे
अविष्य मध्यरात्रा दूर्ध्वं चेति पामाच्छके विध
प्रातः श्रावण न चत्र पूर्णिमादिति प्यस्त, यो
पाकर्मद्वषकः ॥ इति सर्वशाखिनाम् ॥ नि
र्णयसिन्धु ग्रन्थे पि द्वितीयपरिच्छेदे ॥ श्रावण
तद्दिने संक्रान्त्यादौ तु उपाकर्म न कुर्वीत क्रमा
त्साम यजुर्विदः ॥ ग्रह संक्रान्ति युक्ते हस्ते
श्रावणपर्वा स्यादिति हेमाद्रौ निर्णयः चासञ्चम्याद
यो ग्राह्याः ॥ मदनरत्नेपि ॥ यदि स्यात् श्रवण

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

पर्वग्रहसंक्रान्तिदूषितं स्यादुपाकरणम् अत
पञ्चम्यां श्रावणस्य तु ॥ स्मृतिमहार्णवे ॥ सं
क्रान्तिर्ग्रहणं वापि यदि पर्वणि जायते तन्मा
से हस्तयुक्तायाम् पञ्चम्यां वा तदिष्यते ॥१॥ प्र
योगपारिजाते वृद्धमनुकात्यायनौ ॥ अर्द्धु
रात्रादधस्ताच्चेत्संक्रान्तिर्ग्रहणं तदा उ
पाकर्म न कुर्वीत परतश्चे न्न दोषकृत् ॥
मदनरत्ने ज्योपि ॥ यद्यर्धरात्रादर्वाकु
क ग्रहः संक्रमणं वा च नोपाकर्म तदा कर्प्योह
श्रावण्यां श्रवणे पि वा ॥ एतेन ग्रहणकाले
श्रवणसत्त्वे एव निषेधो नार्वाक् ॥ अथ भा
षा मे ॥ उपाकर्म ऋषिपूजन जो श्रावण शु
क्ला १५ पूर्णिमा को ग्रहण चन्द्रमा का होवे
अथवा संक्रांति पर्व हो तो उपाकर्म ऋषिपू
जन न हो करना क्यों के ग्रहण संक्रांति के हो
णे से दूषित है वाक्य पूर्व लिख आये है ॥ ई
सवास्ते पञ्चमी हस्त नक्षत्र मे श्रावणी कर
लेणी ऋषिपूजन कर लेणा ॥ और रक्षा बं
धन श्रावणी पूजन पूर्णिमा को ग्रहण होणे से
प्रथम प्रातःकाल कर लेणे मे कोई दोष नहीं है ॥ के
वल उपाकर्म ऋषिपूजन तर्पण मे ही दोष है

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

...वालोंको यही निर्णीति है ॥ और जो देव...
...दित ... समझकर के पंचेमो कोई सम व...
कर लेते हैं यहां तो सभ काम राखके होगे उनको करते
हैं ॥ अथ रक्षाबंधनम् ॥ अस्यामेव पूर्णिमायां
भद्रारहितायां त्रिमुहूर्ताधिकोदयव्यापिन्यां
अपराह्णे कार्यं प्रदोषे वा कार्यम् ॥ उदये त्रिमु
हूर्तन्यूनत्वे पूर्वेद्युः भद्रारहिते प्रदोषादिकाले
कार्यं ॥ इदं ग्रहणसंक्रांतिदिनेपि कर्तव्य
म् ॥ मंत्रस्तु ॥ येन बद्धो बली राजेति ॥ श्राव
ण पूर्णिमा कुलधर्मादौ त्रिमुहूर्ता सायाह्न
व्यापिना पूर्वविद्धैव ग्राह्या ॥ त्रिमुहूर्तन्यून
त्वे परा ॥ उक्तं च ॥ श्रावणी दुर्गनवमी दूर्वा चै
व हुताशनी पूर्वविद्धैव कर्तव्या शिवरात्रि
र्बलेर्दिनम् ॥ इतिवचनात् ॥ इदं भद्रायां न का
र्यम् ॥ भद्रायां द्वे न कर्तव्ये श्रावणी फाल्गु
नी तथा श्रावणी नृपतिं हन्ति ग्रामं दहति
फाल्गुनी इति वचनात् ॥ तत्सत्वे तु रात्राव
पि तदन्ते वा कुर्यात ॥ इति निर्णयामृते ॥
मिति ... दारायान्तु ॥ ततोऽपराह्णसमये ... श्रवण
...पाट्लिवां ... कार्यं ... ॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

रीऊर्ध्वे हे मम्हषितैरिति॥ उपाकर्मणि वे:
सर्गे यथाकालं समेत्य चक्षुषी न्दर्भमया
कृत्वा पूजयेत्तर्पयेत्ततः॥ उपाकर्मणि च
तेव्वमृषीणं चैव तर्पणं ततो ऽपराह्णसमये
रक्षापोट्टलिकां अभ्यासमु कारयेद्दक्षतैः शर्षोः शि
क्षार्थे हे मम्हषितैरिति॥ उपाकर्मणि पञ्चताव
पि॥ संक्रांति ग्रहणं वापि पौर्णमास्यां यदा भ
वेत् उपाकृतिस्तु पञ्चम्यां कार्या वाजसने
यिभिः॥१॥ अत्र कपदोतु हस्तेन उपाकं
र्मेऽपराह्णे कर्म उपाकर्मेतु पंचम्यां कार्य
वाजसनेयिनः॥ रक्षाबंधनार्थे उपाकर्मणि
ग्रहणसंक्रान्तिदोषो नास्ति॥ उक्तं च॥ निर्णया
मृते॥ निर्णयसिन्धावपि॥ नित्ये नैमित्तिके जाप्य
होमे यज्ञक्रियासु च उपाकर्मणि चोत्सर्गे ग्रह
दोषो न विद्यते इति वचनात्॥ इति श्रावणीनिर्ण
य॥ अथ विजयादशमीनिर्णयः॥ धर्मसिन्धौ द्वि
तीयपरिच्छेदे॥ सा परदिन एवापराह्णव्याप्तौ परा॥
दिनद्वये ऽपराह्णव्याप्तौ दिनद्वयेपि श्रवणयोगे स
ति ऽसति वा पूर्वा॥ एवं दिनद्वये ऽपराह्णव्या
प्त्यभावेपि श्रवणयोगसत्वासत्वयोः एवैव॥
प्रथ्य॰ ॰॰ऽपराह्णव्याप्त्यव्याप्त्योरेकतरदिने श्रव
णत्व उपा॰ ॰॰॰ते श्रवणयोगस्सैव ग्राह्या॥ ए
एव: ॰॰॰॰॰॰

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

कंअपराह्ने कदेशव्याप्त्यभावे चमु॥ यदा पूर्वदिने रे
वापराह्नव्याप्तापरदिने च श्रवणयोगाभावस्त
दापिपूर्वैव॥ यदा तु पूर्वदिने एवापराह्नव्यापि
नी परदिने च मुहूर्तत्रयादिव्यापिनी॥ अपरा
ह्नात्पूर्वमेव समाप्ता परत्रैव श्रवणयोगव
ती तदा परैव॥ अपराह्नैकदेशव्याप्त्यभावेपि॥ यांति
थिं समनुप्राप्य उदयं याति भास्करः इति सा
कल्पवचनैः॥ श्रवणयुक्ता यां ग्राह्या यां॥
प्रोदयैकस्व त्यदशाम्याः कर्मकालेसत्वा
पादनात॥ सिद्धौ तिथि दपरदिनेऽपराह्नका
ले श्रवणसत्वे एव श्रवणस्यापिऽपराह्नात्पू
र्वमेव समाप्तौ तु पूर्वैवेत्युक्तम्॥ युक्तं चैतत
॥ यदा परदिने एवापराह्नव्याप्तिः पूर्वदिने ए
वापराह्नास्पर्शन्न सा याह्नं दो श्रवणयोगस्त
दा तु परैवग्राह्येति मम प्रतिभाति॥ अपराह्नका
लस्पर्शस्य त्वात॥ निर्णयसिंधुः इति यप्र रि
छेदे आश्विन निर्णये विजयादशमी नि
र्णयः॥ सा च द्वितीयदिने श्रवणयोगाभावे
पूर्वा ग्राह्या॥ तदुक्तं हेमाद्रौ स्कांदे॥ दशम्यां
तु नरैः सम्यक् पूजनीयापराजिता॥ दोमा
र्थं विजयार्थं च पूर्वोक्तविधिना नरैः॥ न

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

राघव को प्रश्न वह है जो नवमी दो हों
एक नवमी घटि ६० हो दुसरी घ० २ वा ४ हो
उसको शेषक० है॥

नमीशेषसंयुक्ता यां दशम्यामपराजिता मुदं
दाति विजयं देवी पूजिता जयवर्द्धिनी ॥ तथा
आश्विने शुक्लपक्षे तु दशम्यां पूजयेन्नरः एका
दश्यां न कुर्वीत पूजनं चापराजितमिति ॥ यदा
तु पूर्वदिने श्रवणयोगाभावः परदिने चास्त
पितद्योगिनो तदा परैव ॥ तथा च हेमाद्रौ ॥ व्रतक
ण्डे कश्यपः ॥ उदये दशमी किंचित्सम्पूर्णै
कादशी यदि श्रवणर्क्षं तु यदा काले सा तिथिः
[illegible] ॥ श्रवणर्क्षे तु पूर्णायां काकुस्थः प्रस्थितो य
तः उल्लंघयेयुः सीमानं तद्दिनर्क्षे ततो नराः
काकुस्थः रामचन्द्रः ॥ काले कोर्थः ऽपरा है ॥ प
रदिने श्रवणाभावे तु सर्वपक्षे पूर्वैव ।
मदनरत्ने ज्योतिर्निबन्धे रत्नकोशे ना
रदः ॥ ईषत्सन्ध्यामतिक्रान्तः किंचिदुद्भिन्न
तारकः विजयो नाम कालोयं सर्वकार्यार्थ
साधकः सिद्धिदः ॥ इषस्य दशमी शुक्ला पूर्वं
विद्धां न कारयेत् श्रवणेनापि संयुक्ता राज्ञो
पद्याऽभिषेचने सर्व्वोदये यदा राजन् दृश्य
त दशमीति स्थितिः आश्विने मासि शुक्ले तु विज
यां तां विदुर्बुधाः ॥ अत्रायं निर्णीतार्थः ॥ अप
राह्ण एव मुख्यः ॥ कर्मकालः ॥ तत्रैव पूजाद्युक्तेः प्र
दोषे गौणः ॥ तत्र दिनद्वयेऽपराह्णव्याप्तिवे पूर्वा

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

निर्णय पत्र १० | प्रा. हो. १३ | व० ज्यो० सार ग्रंथ में तिथि निर्णय ... नवरात्री व्रत निर्णय

न चोत्रे न तिथि वीनत ॥ अतः तिथि मुख्या ॥
दशमीविद्धा ग्राह्या ॥ अपराह्न व्यापिनी हो ॥ प्रो
तन्य उस दिन न हो वै तो [illegible] न
नमें है ॥ अपराजिता पूजन करणा पूर्व वि
द्ध दशमी ग्राह्य है जो नवमी में दशमी आजा
वे वोह ग्रहण करणी ॥ कालमाधव ग्रंथ में प
न ५६ पर वी यह वाक्य लिखा है ॥ पुत्रान् हन्ति
पशून् हन्ति हन्ति राष्ट्रं सराजकं हन्ति
जातानजातांश्च दशमी चैव नन्दायुता
इस वाक्य से पर विद्धा नहीं करणी जो दश
मी में नन्दा नाम है एकादशी का सो विजया द
शमी एकादशी युक्त नहीं करणी जो नव
मी में दशमी आवे वोह पूर्व विद्धा ग्रहण
करणी चाहिये श्रवण नक्षत्र हो चाहे न हो
श्रवण नक्षत्र की मुख्यता नहीं है तिथि की
मुख्यता है ॥ अपराह्न व्यापिनी दशमी हो सो या
ह्न व्यापिनी हो तो उदय व्यापिनी हो सो
ग्राह्य है ॥ यह वाक्य व्रतोद्यापन कौ
मुदी में लिखा है व्रतार्क में भी यह ही वाक्य लि
खा है ॥ पूर्व विद्धा ग्राह्य है ॥ [illegible]

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

[illegible]

[illegible] का लग्न ध वक्रके है अताः

बीते मिलने ॥ [illegible] नुख्या है
[illegible] ॥ [illegible] ख्या [illegible]
[illegible] सगिवा [illegible]

॥ [redacted] ॥ अथ परा रुद्र स्य

वधाविभक्ते गृहे नेः चतुर्थो भाग ॥ त्रिमु
हूर्तेः अपरा रुद्र का लो ज्ञेयः ॥ त्रिंश त्घ
टि दिनमा नेषट घटि कालस को चतुर्थोंश
ज्ञा ऽ परा रुद्र ॥ यह है अपराह्न काल दो प्र
हर ॥ अथ पञ्च काल संख्या ॥ ५ ॥ प्रातःका
ल १ संगव काल २ मध्याह्न काल ३ अ
पराह्न काल ४ सायंकाल ५ यह पञ्च
काल जानना है पांच प्रकार काल की संख्या है ॥ अ
लग्नु ॥ अथ पूजन प्रकारः ॥ प्रथम स्वस्ति
वाचन करवा पश्चात् संकल्प करे ॥ दे
शकालौ संकीर्त्य ॥ अमुक गोत्रो हं अमु
क अमुक शर्मा हं वर्मा हं वा गुप्तो हं
मम सकुटुम्बस्य क्षेमसिध्यर्थं अप
राजिता पूजनम हं करिष्ये ॥ तदङ्गं दे
वतान्ति विघ्न परिसमाप्ति पूर्वक अ
पराजितापूजनादि देवीरूपापञ्चारे रहे पूजन
विधि ॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

…ज्ञ ॥ यमद्वितीया तु प्रतिपद्युता ग्राह्येत्युक्तम्
निर्णयामृते । तदोक्तं यमद्वितीया मध्याह्नव्यापिनी
ग्राह्येत्युक्तम् ॥ एवं विज्ञाय चेति हेमाद्रौ ॥ स्कांदेपु
क्तम् ॥ ऊर्जे शुक्लद्वितीयायां अपराह्नेऽर्चयेद्यमम्
स्नानं कृत्वा भानुजायां यमलोकं न पश्यति ॥ इति
वचनात् अपराह्नव्यापिनी ग्राह्या ॥ अस्यां द्वितीया
यां तेन भगिनीहस्ताद्भोक्तव्यम् ॥ … भावे भग्नी
भावे तु भगिनीहस्ताद्भोक्तव्यम् ॥ मित्रभगिनीहस्ता
… ॥ इयं पूर्वेद्युरेवापराह्नव्याप्तौ पूर्वा
… ॥ … यत्र व्याप्त्यव्याप्त्यादिपक्षान्तरं तु प
… मा ॥ सं… च ॥ धर्मसिंधु द्वितीयपरिच्छे
सप्तमीसे उपर … द्वितीयानिर्णयः ॥ अथ दी
… देखकर के … पूर्वविद्धा करनी वा
त सो … पांता … दरवती … तव करणी वा
… में प्रवेश हो उसमें ता… देखे … वा
देखे सप्तमी करके अष्टमी … है ॥ अथ
नवमी आजावे वो व्रत नहीं करणा ॥ इति
सप्तमीनिर्णयः ॥ कार्तिककृष्णत्रयोदश्यां यम
दीपदानम् ॥ भाषा में यमदीवा कहते हैं ॥ सो प्रदो
दशी में जो त्रयोदशी आवे तब करणा … व
त त्रयोदशी … न हो रात्रि को वी मध्यरात्रि
तक हो तब वी सायंकाल को यमदीप दान करे

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

॰अष्टमी विद्धायाः निषेधात् ॰अष्टमी विद्धांय
ज्या॥॰ अतः पूर्व वेधः सकलं तमेदधा न्नापि नीम्
त्यक्तामध्या है के देश व्यापिन्या विपरे व ग ह
॥ को चेत् ॰अष्टमी विद्धा न ध्या न्नापिनी
मूपुन वेसु युक्ता अपि त्यक्ता॥ परे धु रवि पूर्
तोऽपि नवमी सवे रप्पु पो ष्या॥ यदि तु दशम्या
तास व शेन पारणाहिने स्मार्तानामेकादशी
व्रत प्राप्तिस्तदा स्मार्तैः ॰अष्टमी विद्धो ... ष्या
श्रद्धायाः नवम्याः ॰अलाभे अष्टमी त्रे ...
वा सर्वैरपि ॰अष्टमी विद्धैवोपो ... ग ... मुव
इदं व्रतं नित्यं काम्यं च॥ वेधनो च॥ अवे
श्येस्स्प्प्पे न वमी व्रतम काप्पोष्या नी पूर्व विद्धा
मीन राशि स्पस्प्पे वा प्प ॥ ते दिनम्॥ इसवा
यः॥॰ अष्टवै शाषभ्रन
हूज पती सासुऋ करणा॥ ॰अमावस्या में जो प्र
तिपदा आवे उसको पूर्व विद्धा कहते है॥ जो
र्जनं च जो मये न काप्प मु॥ चैत्रे एण वा॥ ॰प्र
ऊनं च जो मये न काप्पमु॥ गोवर्धन पूजन व
न्न कूट ने वा काप्पमु तिथुमे ॥ पूजन प्रकार स
राज पूजन पूर्व विद्धा करण उसमे
कल्प कल्पनागे थान सार करणा उसमे निर्णय सि
सभ के पूजन प्रकार लिखे है। निर्णय सिं
धुमे वा लि ० हो॥ ॰अथ यम द्वितीया निर्णय॥

[illegible]

14

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

ग्राह्या॥ यमद्वितीया तु प्रतिपद्युता ग्राह्येत्युक्तम्॥
द्वितीयायामस्तं दौ तु यमद्वितीया मध्याह्नव्यापिनी॥
ग्राह्येत्युक्तम्॥ एवं विज्ञाश्चेति हेमाद्रौ॥ स्कान्दे तु
क्तम् ऊर्जे शुक्लद्वितीयायां अपराह्णेऽर्चयेद्यमम्
स्नानं कृत्वा भानुजायां यमलोकं न पश्यति॥ इति
वचनात् अपराह्णव्यापिनी ग्राह्या॥ अस्यां द्वितीया
यां नैजेन भगिनीहस्ताद्भोक्तव्यम्॥ अभावे भग्न्य
भावे पितृभगिनीहस्ताद्भोक्तव्यम्॥ मित्रभगिनीहस्ता
द्भोक्तव्यं॥ दिनद्वये पूर्वेद्युरेवापराह्णव्याप्तौ पूर्वा
ग्राह्या॥ उभयत्र व्याप्तव्याप्त्यादिपक्षान्तरेषु प
रैव ग्राह्या॥ वाक्यं च॥ धर्मसिन्धौ द्वितीयपरिच्छे
दे लिखितम्॥ इति द्वितीयानिर्णयः॥ अथ विज
यानवमीनिर्णयः॥ शिवरात्रिः पूर्वविद्धा कर्तव्या
त्रयोदशी मेजा चतुर्दशी श्रावणे तु करणीया वाक्यं
च॥ श्रावणी दुर्गनवमी दूर्वा चैव हुताशनी॥ प्राये
सा वाक्ये पूर्वविद्धा करणी॥ अत्र तम्॥ चैत्रे शु
क्लेऽष्टम्यां भवान्याः उत्पत्तिः सा तु नवमीयुता ग्रा
ह्या॥ अथ रामनवमीनिर्णयः॥ चैत्रशुक्लनव
म्यां पुनर्वसुयुतायां मध्याह्ने कर्कलग्ने मेष
स्थे सूर्ये उच्चस्थे ग्रहपंचके श्रीरामजन्माव
तरणात्॥ अस्यां मध्याह्नव्यापिन्यामुपोषणं का
र्यम्॥ पूर्वेद्युरेव मध्याह्ने सत्त्वे सैव ग्राह्या
दिनद्वये मध्याह्नव्याप्तौ अव्याप्तौ वा परा ग्राह्या॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

वैष्णवे: प्रकृतत्रयप्रताप... ख्या

ऽष्टमी विद्धायाः निषेधात् ऽष्टमीविद्धां
ज्या॥ ऽतः पूर्वेद्युः सकलतमेऽव्यापिनीम्
स्यकामध्या है क देश व्यापिन्यपि परे वजह
॥ केचित्तु ऽष्टमीविद्धा न ध्यान्त व्यापिनी
मृ पुनर्वैश्यु युक्ता मपित्यका॥ परेद्युरेव पूर्ण
तोऽपि नवमी सवैरप्युपोष्या॥ यदि तु दशम्या
मास नवमी न पारणाद्दिने स्मार्तानामेवाष्टमी
व्रतप्राप्तिस्तदा स्मार्तैः ऽष्टमीविद्धा ...
ऽद्धा यः नवम्याः प्रलाभे महतैत्रे ... वे
वासवैरपि ऽष्टमीविद्धैवोपो ... तु॥
इदं व्रतं नित्यं काम्यं च॥ वैष्णवानां तु मत्
स्येपस्पृष्टे नवमी व्रत मकाप्पेम् ॥ स्मार्तानां तु
मीन रोशिस्पस्पृष्टे वा ... ॥ इति रामनवमीनिर्ण
यः॥ ऽथ वैशाख शुक्ला नृसिंहचतुर्दशी नृसि
हजयंती सा स्पृष्टा सायंकाल व्यापिनी
... ह्या॥ दिन द्वये व्याप्तौ ऽव्याप्तौ वा ... वे
ग्राह्या॥ स्वातिनक्षत्र शनिवारादि योगे स
ति प्रशस्ततरा॥ इति [...] नृसिंह... निर्ण...
स्मार्तविषयं नृसिंहचतुर्दशीनिर्ण
यः॥ ऽथ वैष्णव विषयं नृसिंहजं
यन्ती निर्णयः॥ जयन्ती निर्णये॥ जय
न्ती निर्णय ग्रंथमें नृसिंहचतुर्दशी का नि
र्णय इस प्रकार से लिखा है सो वाक्य लिखते हैं

15

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

ज्ञा॥ यमद्वितीयायां तु प्रतिपद्युता ग्राह्येत्युक्तम्॥
निर्णयामृते तु यमद्वितीया मध्याह्नव्यापिनी॥
ग्राह्येत्युक्तम्॥ एवं विज्ञा चेति हेमाद्रौ॥ स्कान्दे तु
क्तम्॥ ऊर्ज्जे शुक्लद्वितीयायां अपराह्णे च पेच यम
स्नानं कृत्वा भानुजायां यमलोकं न पश्यति॥ इति
वचनात्तु अपराह्णव्यापिनी ग्राह्या॥ अस्यां द्वितीया
यां चैव हि भगिनीहस्ताद्भोक्तव्यम्॥ अस्यां वै भर्म्म
भावे तु भगिनीहस्ताद्भोक्तव्यम्॥ मित्रभगिनीहस्ता
द्भोक्तव्यम्॥ इयं पूर्वविद्धैव वाऽपराह्णव्याप्तौ पूर्वा
ग्राह्या॥ ॐ अथ यत्र व्याप्त्यव्याप्त्यादिपक्षान्तरं तत्र प
रैव ग्राह्या॥ वाक्यं च॥ धर्मसिंधु द्वितीयपरिच्छे
दे लिखितम्॥ इति द्वितीयानिर्णयः॥ अथ शिव
रात्रिनिर्णयः॥ शिवरात्रिः पूर्वविद्धा कर्त्तव्या॥
त्रयोदशीमेजो चतुर्दशीं आवेत व करणे वाक्यं
च॥ श्रावणी दुर्गनवमी च हपूर्वा लिख प्रायेऽ
ऽसावाः कंथसे पूर्वविद्धा करणी॥ मतम्॥ चैत्र
लोऽष्टम्यां भवान्या उत्पत्तिः सा तु नवमीयुता ग्रा
ह्या॥ अथ रामनवमीनिर्णयः॥ चैत्रशुक्लनव
म्यां पुनर्वसुयुतायां मध्याह्ने कर्कलग्ने मेष
स्थे सूर्य्ये उच्चस्थ ग्रहपञ्चके श्रीरामजन्माव
तरणं तत्॥ अस्यां मध्याह्नव्यापिन्यां उपोषणं
कार्य्यम्॥ पूर्वविद्धैव मध्याह्ने सत्त्वे सैव ग्राह्या
दिनद्वये मध्याह्नव्याप्तौऽव्याप्तौ वा परा ग्राह्या॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

अष्टमी विद्धायाः निषेधात् अष्टमी विद्धा
त्या ॥ अतः पूर्वेद्युः सकल मेध्या [illegible] व्यापिनी म
स्य कामध्या हे के देश व्यापिन्य विपरे व [illegible]
॥ केचित्तु अष्टमी विद्धा न ध्यान्हे व्यापिनी
मपुनर्वसु युक्तामपि त्याज्या ॥ परेद्युस्त्रिमुहू
र्तोऽपि नवमी सर्वैरुपोष्या ॥ परेद्युस्तु दशम्य
नास [illegible] न पारणादिने स्मार्तानां वैष्णवानां
व्रत प्राप्तिस्तदा स्मार्तैः अष्टमी विद्धा [illegible]
[illegible] या नवम्याः प्रलाभे [illegible]
वा सर्वैरपि अष्टमी विद्धैवोपो [illegible]
इदं व्रतं नित्यं काम्यं च वैष्णवानां तु [illegible]
स्य सर्वैर्नवमी व्रत मकाम्यम् ॥ स्मार्तानां तु
नित्यं [illegible] वा [illegible] इति राम नवमी नि
र्णयः ॥ अथ वैशाख [illegible] नृसिंह चतुर्दशी नृसिं
ह जयंती सा स्वल्पा [illegible] व्यापिनी
[illegible] ॥ दिन द्वये व्याप्तौ [illegible] पूर्वा
ग्राह्या ॥ स्वाति नक्षत्र [illegible] शनिवार [illegible] योगे स
ति [illegible] प्रशस्ता ॥ इति [illegible]
स्मार्त विषय नृसिंह चतुर्दशी निर्ण
यः ॥ अथ वैष्णव विषय नृसिंह ज
यन्ती निर्णयः ॥ जयन्ती निर्णये जय
न्ती निर्णयग्रंथे नृसिंह चतुर्दशी का नि
र्णय इस प्रकार से लिखा है सो वाक्य लिखते हैं

15

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

अनङ्गेन समायुक्ता नसा पौष्या चतुर्दशी पू
र्णा प्रकीर्तिता ताकुर्प्यां नरसिंहस्यतु पूजये ॥१॥
चतुर्दशीं न वर्तेत सायंकाले दिन द्वयपरे
व वर्तेते चापि का तत्र्या सा परे वतु ॥२॥ प्राधान्येन
पिः स्त्री नृसिंह चतुर्दशी सर्वाघनाशिनी
स्मृता कि मेता स्वाति संयुता ॥३॥ स्वातियुक्ता
तु नो पौष्या ह्यनङ्ग संहिता यदि चतुर्दशी
नृसिंहस्यापि विप्रा विघ्न परायणी ॥४॥ मा
स्य मानो उदयान्मद तैत्रिमिरान्विता चतु
र्दशी न सग्राह्या त्रयोदश्यात्तु वैष्णवे ॥५॥
त्रेभिः मङ्कृति विद्धा चेत्त्रयोदश्यां चतुर्दशी स्वा
ति युक्तापि न ग्राह्या श्रीरामनवमी यथा ॥६॥
उदये यदि संयुक्ता त्रयोदश्यां चतुर्दशी सा त्याज्या
वैष्णवैः देवी यदि चेदूर्ध्वं नम्मात्तयं ॥७॥ चतु
र्दशी पूर्णमासी कर क्षयेत होतो ग्रहणा करण
त्रयोदशीयुक्त न होकरणी इति नृसिंह चतुर्द
शी निर्णयः ॥ अथ वामनजयन्तीवामन द्वादशी
निर्णय लिखते हैं ॥ शैव स्मार्त को तो धर्मसिन्धु ग्रं
थ द्वि० परिच्छेद में [illegible] लिखा है भाद्र [illegible] शुक्ल द्वा
दश्यां श्रवण [illegible] यामा मध्याह्ने वामनोत्पत्तिः
[illegible] प्रतो नद्यान्तं दश्यापि [illegible] द्वादशी म
ध्याह्ने ततोऽन्य पत्रकाले वा श्रवण युता ग्राह्या
उभयदिने श्रवणयोगे पूर्वैव ग्राह्या ॥ सर्व

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

व्याद्द्वादश्या: श्रवणयोगाभावे॥ एकादश्यां
श्रवणसत्त्वे मध्याह्नव्यापिनीमपि द्वादशीं विहा
य एकादश्यामेव व्रतं कार्यम्॥ शुद्धैकादश्याम्
श्रवणाभावे दशमीविद्धैकादश्यां यदि श्रवणः प्र
तीयाम् व्रतं कार्यम् एवं दिनद्वये मध्याह्नव्यापि
नी द्वादशी परदिने मध्याह्नात् अन्यत्र काले श्र
वणप्रतीतौ तदा पूर्वैव कार्या तिथिद्वयेऽपि श्रव
णयोगाभावे द्वादश्यामेव मध्याह्नव्यापिन्यां व्रत
कार्यम्॥ दिनद्वये मध्याह्नव्याप्तौऽव्याप्तौ वा स
चैकादश्यां व्रते वत्वा द्वादश्यां पारणात् पूर्वं करी
मुपानेऽन्यतरन्नो वा कार्यं। अत्र मध्याह्ने दे
संगमे स्नात्वा सौवर्णं वामनं संपूज्य अर्घ्यं दद्या
त् इति धर्मसिंधूक्त वामनद्वादशी निर्णयः॥
इस प्रकार धर्मसिंधु के अनुसार वामन
द्वादशी व्रत निर्णयः समाप्त हुवा है॥ अब वैष्ण
वों का वामन जयन्ती को व्रत का निर्णय जयन्ती नि
र्णय ग्रंथ से करना चाहिये॥ जयन्ती निर्णय
वाक्य लिखते हैं॥ भाद्रे तु शुक्लद्वादश्यां नक्षत्रं श्र
वणं यदि श्रवणद्वादशी नाम सर्वं प्रोक्ता मु
निपुंगवैः॥१॥ द्वादश्येकादशीस्पृष्टा तत्र
च श्रवणं यदि सा विष्णुशृंखला नाम स
र्वफलदा स्मृता॥२॥ मात्स्ये० द्वादशी श्र
वणर्क्षं च स्पृशेदेकादशीं यदि स एव वैष्ण
वो योगो विष्णुशृंखलनामतः॥३॥ तस्मि

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

...ति रामनवमीनिर्णयः परमापदमापन्ने
...नि च समुपस्थिते विवाहव्रत वै चादौ यज्ञे
...ोत्सवदये तथा सूतके मृतके वापि न त्याज्यं
...नवमीव्रतम् ॥ इसी वाक्य से रामनवमी जन्मा
...ष्टमी च सिंह चतुर्दशी वामनद्वादशी इ...
...के व्रत का त्याग सूतक पातक में भी न...
...ही करणा और एकादशी के व्रत का वी त्याग
नहीं करणा ॥ जयन्तीनिर्णय के यह वा
क्य है ॥ भानुवार समोपेता तथा संक्रान्ति सं
युता एकादशी सदोपोष्या पुत्रपौत्रविवर्द्धिनी
॥ यह भी वाक्य जयन्तीनिर्णय ग्रंथ का है ॥
...ओर रविवार को एकादशी होतव एक पुत्र वाले
...कू व्रत न ही करणा यह वाक्य जैमिनी जी का है
...धर्मसिंधु आदि ग्रंथो में लिखा है सो इस ग्रंथ
...नीनिर्णय ग्रंथ में यह पूर्वोक्त वाक्य लिखा है के वै...
...ल वाको को दोष कदाचित् नहीं है ॥ और शैव स्मा...
...र्तो को तो दोष वहुत ही होगा यह लिखा ॥ सदा एका
दशी और ६ जयंती व्रत नही छोडणा सूतक में वी
और पातक में वी नहीं छोडणा अन्यत्र यावत् ॥ जन्मा
ष्टमी १ रामनवमी २ वामनद्वादशी ३ नृसिंह चतुर्द...
शी यह ४ चार जयन्ती कहलाती है ॥ जयं... धर्मस...
...ञ्चेते जयन्त्याख्येन चोच्यते ॥ १ ॥ श्राद्धदिने पि...

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

त्याज्यमेकादशीव्रतम् ॥ जयन्ती ॥ दशमी से
युक्त नहीं करना ॥ उक्तं च जयन्तीनिर्णये ॥
उपवासे यदा नित्ये श्राद्धं नैमित्तिकं भवेत्
उपवासं तदा कुर्यादाघ्राय पितृसेवितम् ॥
इस वाक्य से श्राद्ध के दिन व्रत
कर लेना कुछ दोष नहीं लगता है ॥ मनु
निर्णयसिन्धु एकादशीनिर्णय में वेध के
क्या लिखा है ॥ सूतके मृतके चापि न त्याज्यं
एकादशीव्रतम् ॥ न त्याज्यं द्वादशीव्रतं
व्रतमात्र कर लेना और दानादिक सूत
कान्त में करें ॥ रजोदर्शनेऽपि
तम् वाप्येवम् ॥ दानादिके तु पंचमेऽह्नि काय
म् ॥ जयन्तीनिर्णय ग्रन्थ में एकादशी का
निर्णय लिखा है स्कन्दमात्र से ॥ अथ एकादशीनि
र्णयः ॥ उदये नवमी किंचिद्दशमी सकला यदि द्वादश्यामु
पवासश्च त्रयोदश्यां तु पारणम् ॥ नवम्या वा दशम्या वा
द्र पंचाघटि यदि तत्र एकादशीं त्यक्त्वा द्वादशीं समु
पोषयेत् ॥ नवमी पलमेके तु दशमी तु चतुर्यं जाता
त्र एकादशीं त्यक्त्वा द्वादशीं समुपोषयेत् ॥ इन वा
क्यों से दोषगामिनी वृद्धगामिनी जो दशमी हो तो
द्वादशी में व्रत करना ॥ और जो दशमी का मवम
५० घटि पर हो जावे तो वैष्णव स्मार्तों को समझ को
द्वादशी में व्रत करना ॥ अतएव दशमी के दोष वृद्धि
हो तो से दोषगामिनी वृद्धगामिनी एकादशी हो तो

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

हैत्ति॥
...को.दा.धजामिनी व ज्ञा गामिनी कहते हैं तिस दो य
गामिनी व ज्ञा गामिनी को छोड कर के द्वादशी
व्रत करणा॥ इति एकादशी निर्णयः॥ अथ भाद्र
पद कृष्ण जन्माष्टमी निर्णयः॥ अथ प्रथम शैव स्मा
र्तिकों के व्रत का निर्णय लिखते है॥ धर्मसिंधु
निर्णय सिंधु कालमाधव व्रतार्क इन ग्रंथों से॥
...तिथि कों को कापालविद्धा पिसप्तम्यादि सवाक्य से
...पूर्वा विद्धा जन्माष्टमी का व्रत करणा लिखा है॥
औ स्मार्ती को जो पंच देवता उपासक हैं उन्हें
को उदय पेचाष्टमी किंचित नवमी संकला प
प्राजापत्य दोस हत्या भूथवारेण संयुता॥ वो
...आ. हाकृष्णा जन्म कोटि मुक्ति दाई सवा
क्यसे उदय अष्टमी होउपर नवमी हो...
...हो वा न हो यह व्रत स्मार्ती को करणा॥ और वैष्ण
वों को केवल रोहिणी का उदय ही को मुख्य मान्या
...न वानोतु न दोत्र प्राधान्यं॥ स्मार्तानां तिथेर व
प्राधान्यं॥ रामानुज मते जन्मे जन्मन दात्रं म
...रोहिणी रूच्यते यह वाक्य को मुख्यता है यही वाक्य
को मुख्य मान्या है॥ स्मार्ती को तिथि उदय अष्टमी को
मुख्य मान्या है॥ शेव शाक्तों को सप्तमी विद्धा अष्टमी को
...रात्रि समय अष्टमी को मुख्य मान्या है रोहिणी अ
...रात्रि को प्रमाण यह है॥ रोहिण्यामर्द्ध रात्रे तु यदा कृ
ष्णाष्टमी भवेत् ईसवाक्य से शैव [illegible] को शा

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

तों को मुख्य कातां जाराना॥ वैष्णवों के जो
तीनि एवं पजं पानेसागर नक्षत्र को प्राधान्य मान्यो
है॥ जननेजन्म नक्षत्र मुख्य तिथि रुच्यते। ग्रह
भं तु परित्यज्य रोगहेणिं समपोषयेत॥ वाल्मीकि
प्रति श्रीजानकीवाक्यम्॥ नचाहं स्वेरिणी भार्या न
चाहं मपकित्रता नचैहं कालुसंयेनार्के पाप
परजन्मनि॥ रामपत्न्या वचः श्रुत्वा वाल्मीकि
र्मुनिपुंगवः चिरध्यात्वा महाराज तो मु
वाचेदं शं वचः॥ सप्तमी वर्षकसंभ्रला
ष्ट चाष्टमी व्रतमुत्तमम्याचैतस्त्वया देवी त
स्यैककर्मणः फलम्॥ नारदसंहितायां॥ स
वीस्वपि जयन्तीषु वैष्णवो या वदुर्गा
प्याचोदिके तत्कालदानेपारणं चरेत्॥ पंच
रात्रे ज्ञाना जानातास्त्रिनाभेपि
केभोजवते सौदु रात्रावेवतु पारणं॥ ज
तीवासरे प्राप्य पक्षकालरतात्मभिः का
र्यं यं प्रयत्नेन रात्रावेवतु पारणम्॥ उत्स
वान्ते च तिथ्यन्ते व्रती कुर्याच्च पारणम्॥ वै
ष्णवानां तु उत्सवान्ते पारणम् कु० स्मार्तानां
तु विप्रास्तिं पूर्वः पारणम् स्मृतम्॥ पञ्च
देवोपासकानां स्मार्तानां सर्वेषां शद्गोऽपि
वविधमयहं पञ्चदेवहे॥ वैष्णवों को तो रोहि
णी नक्षत्र का उदय है तब व्रत करना लिखा है
नक्षत्र का उदय होने तव व्रत करना लिखै है॥ 18
॥ सिंह का सूर्य हो तब व्रत

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

नै व्रतोंको सिंहके सरूपमें रोहिणीनक्षत्रको उदय
मे व्रत कर [illegible]य नो निर्णय ग्रंथ में लिखा है॥

अथ जन्माष्टम्यां नवम्यां वा दशम्यां यदि रोहिणी
इत्यादिक वाक्योंसे रोहिणीका उदय पक्ष
माना है॥ निर्णयसिंधुमें लिखा है॥ न
नो पारणं कुर्यादृते वै रोहिणी व्रतात्
सर्वेष्वेवोपवासेषु दिवा पारणमिष्यते
रोहिणी व्रतादृते॥ रोहिणी नक्षत्रके उदय
में जो वैष्णवव्रत करते हैं उनको दोपहर है
दिनमें करो चाहे रात्रिमें करो पारण॥ उनको तो उ
त्सवान्ते पारणं कुर्यात॥ यह लिखा है॥ तदनन्तरमु
पारणं चरेत॥ पारकर्मसमाप्तौ धातु से पारण
यह सिद्ध होता है॥ वीनां नन्दोनकर्तव्या ने
वमीसंयुता ष्टमी न यं धर्मस्य कुरुते जयन्ती
न कीर्तिता॥ न चात्र प्राधान्यं जयन्तौ चोच्यते
तिथि प्राधान्यं जन्माष्टमी चोच्यते॥ इति जन्मा
ष्टमी व्रतनिर्णय॥ अथ पारणाचार्यम्[illegible]
यह सब भाव जयन्ती निर्णय ग्रंथ के है॥ श्री

अथ ग्रहणनिर्णयः॥ धर्मसिंधुप्रथम परि
च्छेद पत्र २१॥ चंद्रसूर्य ग्रहणं पावचा[illegible]
दर्शनं योग्यता व सुरायकालः॥ प्रतः ग्रस्ता
ह्नो स्पृतते प्रस्तोस्तं द्वीपान्तर ग्रहणं सर्व पि
ते न चोऽप्यन्नाभावान्न प्रस्पर्शान्तः॥ एवं ग्रस्तोदय

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

कि पर्वसम्पूर्णं आरम्भ करके ॥ कृत्वा ततः परम् ॥
लक्ष्मी पूजन करना तथा
करना और रसे शान्ति करके सम्पूर्ण

ये उदयास्तं वै न तु ग्रहणकालतः मेघादि ग्रं ते
न पेन चाक्षुषदर्शनासम्भवे शास्त्रादिनाप
गुमोक्षकालो ज्ञात्वा स्नानदानाद्याचरेत् ॥ अ
॥ मेघमालादिदोषेण यदि मुक्तिर्न दृश्यते ॥ ग्रा
कालपत्तु तन्मानमुस्नानं [illegible] ॥ १ ॥
ग्रहस्पर्शे स्नानम् ॥ मध्ये होमः सुरार्चनं
श्राद्धं च ॥ मुच्यमाने दानम् ॥ मुक्ते स्नान
मिति ॥ क्रमः ॥ जाताशौचे मृताशौचे च ग्रह
निमित्त स्नानदानश्राद्धादिकार्यमेव ॥ स्नान
नैमित्तिके प्राप्ते नारी यदि रजःस्वला पात्रा
न्तरे स्थितोयेन स्नानं कृत्वा व्रतं चरेत् ॥ दान
के समय श्राद्ध के समय व्रत के समय ब्राह्मण भोज
के समय जो रजस्वला हो जावे तो स्नान करके
वस्त्र और धारण करके ॥ ४ ॥ जल में गर के
सभ कृत्य करते ना प्रलम् ॥ ग्रहणदिने ःस
र्वदिने उपवासः कार्यः ॥ त्रिरात्रमेकरात्रं वा
सम्पोष्य ग्रहणे स्नानदानाद्यत्र ध्यानेन म
हाफलम् ॥ एकरात्रपक्षे ग्रहणदिनात्पूर्व
दिने उपवासः इति केचित् ॥ ग्रहणे तीर्थे वा म
त्र दीक्षादौ मालादीन्न शोधयेत् ॥ मुहूर्तादीन्न शो
धयेत् ॥ सूर्यग्रहे मोक्षपर्यन्तं जपेन्मंत्रं समाहि
पत्रवान् ॥ हिरण्यग्रहणसंक्रान्त्यादौ नोपवा ॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

...न्न ग्रहणे सर्वेषां ग्रहणं मुख्यम् ॥ स्वेष्टदे
वता मन्त्र जपो गायत्री जप श्चावश्य कार्य्यम् ॥
ग्रहणकाले शयन कृते रोगी भवति ॥ मूत्रे कृते
दारिद्र्यम् पुरीषे कृमि ॥ मैथुने ग्राम सूकरः ॥
अभ्यङ्गे कुष्ठम् ॥ भोजने नरकः ॥ पूर्व पक्वा
न्नं ग्रहणोत्तरमुत्याज्यम् ॥ एवं ग्रहणका
लस्थितजलमपि त्याज्यम् ॥ कांजिक तक्रम
धृत तैल पाच्चितमन्नम् क्षीरं च पूर्वं गृहीत्वा कु
शं ग्रहणोत्तरं ग्राह्यम् ॥ घृत साधितं जो
रसेषु ग्रहण काले कुश न्यास यै कुर्वीत
दानदोषः पूर्वपक्वान्नं घृत तैल मे दाधि
दुग्ध मे आचार मे कुश र गेरणे से कु
छ दोष न हो है चन्द्रसूर्य ग्रहणे काग्राह
नापत्ये न भुञ्जीत ॥ आदित्य हनि संक्रान्तौ
...ग्रहणे चन्द्र सूर्ययोः पारणं चोपवासश्च
न कुर्वीत तु त्रवान् गृही ॥ इति जैमिनी नेर
षि वाक्यम् ॥ यदा रवेः ग्रासः तदा प्र
त्रियाम प्रहर भ्य यं पि चा वालादिवर्जं भोज
नम् कार्य्यम् न तूपवासः कार्यः ॥ उपराग ग्र
हो राहु ग्रस्तौ विधौ च पश्चिमे चल भरः ॥ ग्रहण
...नं पर्वं परतो दिन सप्तकम् इति सर्व

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

ग्रहणविषयम् ॥ अथ एकमेणी व...
तु ॥ इति मुहूर्तमार्तण्डे लिखितम् ॥ ग्रस्तास्तो
जे पूर्वे त्रिदिनम् वर्ज्यम् ॥ ग्रस्तोदये परस्त्रि
दिनम् ॥ वर्ज्यम् ॥ अर्द्धखण्डे ॥ इसका अर्थ य
है ॥ मध्याह्न का और अर्द्धरात्रि का त्रिदत्ता ॥
ज्यैदेशाधह अर्थ है ॥ शार्ङ्गीयविवाहपटले ॥
सर्वग्रस्ते दिनान्यष्टौ अथ काप्यष्ट वर्जयेत्
त्रिभागोने षट् दिवसान् ॥ अर्द्धे ग्रासे च
दिनम् ॥ चतुर्थांशे त्रिरात्रं तु ग्रहणे सर्वथै द
स्पर्शयोः ॥ अन्यच्च ॥ ग्रहणे त्रिदिनं वर्ज्यं मु
परतो दिनसप्तकम् ॥ इति सर्वग्रहणविष
यम् ॥ मुहूर्तमार्तण्डे लिखितम् ॥ उत्पाते भूकंप
निर्घात महोल्कापाते सप्ताहं शुभकर्माणि त्यजे
त् सप्ताहं शुभं न कार्यम् ॥ अथ ग्रहणतः सकाशात्
उपरि तत्संख्यादिनं त्यज ॥ ग्रहपादः त्रि इ वेद ४
दिवसान् त्यजेत् ॥ तद्दुक्तं भवति ॥ पादैकमात्र
दिवसान् त्यजेत् ॥ अर्द्धग्रहणे चतुरो
ग्रहणे त्रीन् दिवसान् त्यजेत् ॥ त्रिपादग्रहणे षट् दिवसान् त्य
दिवसान् त्यजेत् ॥ पादग्रहणे
तु ॥ सर्वग्रहणे अष्ट दिवसान् त्यजेत् भवति ६० घटि
ग्रहणात् पूर्वे साद्धैक दिवसत्यजेत् ... दो दिवसो ॥ पा
कात्याज्या ॥ अर्द्धग्रहणे चतुर्...
त्रिपग्रहणे ... तीन दिवसान् त्यजे
CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

सर्वग्रहणे प्रच्छानामर्द्धं चन्द्रसौरे वसानं
त्यक्तग्रहणंतु एवं ॥ प्रकृतेचि नाम सौग्रह
णतः पूर्वंमिदं नानं त्रयं त्यजेत ॥ शुभकर्मसो ॥
मन्नानाच्छार्थे मतेन ग्रहणे एकादिनं वर्ज्यं प्र
ख्यावाक्यं तु पञ्चम प्रकृतौ न त्यजेत १० घटि व
र्ज्य देखो शुभकार्य मे यह वाक्य संस्कारम
यूखका है पत्र १६ पर यह वाक्य समवाक्यो
से म्य है विवाह यज्ञोपवीतादिशुभकर्मों
मे ॥ १० घटि वर्ज्य देखो प्रलग्न ॥ वहजपा
दिग्रहणस्नानम् ॥ इ
ति सारे सर्प्पे चन्द्रग्रहण स्नानम् ॥ इ
रवीदष्टौ च १० रे षष्ठे ६ च सप्तम सप्तम ७ जे तु
ग्रहराशौ यदा राहुः अस्तौ च शशी नास्तोर ।
॥ टीका ॥ राहुसे दूसरे बारवें छठे सातवें वा
राहु की राशि से सर्प्पे चन्द्रमा हो यती ज
हण निश्चय करके होजा ॥ अपमता नाम्न
हण स्नानम् ॥ मासनक्षत्र मारम्य नक्षत्रं
भवति षोडशः प्रमायां प्रतिपत्सं घोसर्व
ग्रहणं निश्चितम् ॥ टीका कृष्णपक्षकी प्र
तिपदा को जो नक्षत्र होय उससे षोडश १६
वाँ नक्षत्र प्रमावस्या को आजावे और अ
मावस्या में प्रतिपदा मिलजावे तौ तब ग्रहण

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

श्राद्ध के विषय में यह विचार है जो सूर्य्य ग्रहण हो वा चंद्र ग्रहण हो
उसी दिन वार्षिक आदि प्राप्त होजावे तो द्वितीय दिन श्राद्धादि करते नाम और

होगा॥ जिस नक्षत्र का सूर्य्य होतिस्ते १५
पंद्रवाँ नक्षत्र पौर्णमासी को आन पड़े और
रात्रि को प्रतिपदा मिले तो निश्चय कर के
चन्द्रमा का ग्रहण होगा॥ जिस नक्षत्र का सू-
र्य्य हो [illegible] तिसते १५ पंद्रवाँ नक्षत्र पौर्णमासी
को आन पड़े तो और रात्रि को प्रतिपदा आन मि-
ले तो चन्द्रग्रहण निश्चय होगा॥ सर्वग्रस
ग्रहणे दो वर्ज्यः मास ६ अर्द्ध ग्रासे मास
३ पाद ग्रासे ग्रहणे दो वर्ज्यः॥ जिस नक्षत्र में
ग्रहण हो उस को ग्रह दोक कहते हैं॥ जो ग्र-
हण के दिन किसी का वार्षिक श्राद्ध होवे
र सोंठि हो या दशाह हो स्याद्ध हो या चातुर्वा
र्षिक श्राद्ध हो तो निर्णयसिंधु में लिखा है
ग्रहणात् द्वितीयेऽहनि कार्य्यम्॥ अत्र गो
से दुसरे दिन करे देणा॥ और संस्कार मयूख में
१० घटि वर्ज्य देणी लिखि है॥ और पवना
चार्य्य के मत में एक दिन वर्ज्य देणा लिखा है
इस वास्ते द्वितीयेऽहनि (कार्य्यम्) निर्णय इति वाक्य का अर्थ
जानो विशेष वाक्य धर्मसिंधु निर्णयसिंधु
वल्कमित्ताक्षरा माधवीय निन्दुप्राशर स्मृत्यंतर
से देखते॥ सम्य ग्रहण का निर्णय लिखा है

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

...त्वं नाम किं॥ उच्यते राहुकेतुभ्यां रवि
रविन्द्वोऽस्मिन्निति ग्रहणम्॥ यद्वा उच्य
ते पुण्यपापाभ्यां दत्त प्रतिगृहीतारोऽस्मि
न्निति ग्रहणं॥ [illegible] ग्रहणे प्राप्ते न भुंजी
त नयतथा आदित्यग्रहणे प्राप्ते सर्वयामच
तुष्टयम्॥ सूर्यग्रहे ग्रहणात्पूर्वं [illegible] वा कथा
मतं [illegible] पूर्ववेधः॥ चन्द्रग्रहे [illegible] प्रहरत्र
यं [illegible]॥ तथा च॥ दिनप्रथमप्रहरे र
[illegible] चतुष्टये [illegible]
[illegible] ग्रहे पूर्वं रात्रिप्रहर [illegible] रा[illegible]
[illegible]॥ द्वितीययामे ग्रहणे [illegible]
प्रथमादौ न भोक्तव्यम्॥ वै रात्रिप्रथम प्रह
चन्द्रग्रहे दिने द्वितीययामादौ न भुंजी
[illegible] द्वितीययामादौ ग्रहणे [illegible] तृतीयया
[illegible] न भुंजीत॥ बालवृद्धातुरं विषये तु सा
र्द्धप्रहरात्मको मुहूर्तत्रयात्मको वा वेधः॥ ध
[illegible] कस्य वेधकाले भोजने त्रिदिनमुपोषणं
प्राजापत्य
प्रायश्चित्तम्॥ ग्रहणकाले भोजने [illegible]॥ स्व
प्रायश्चित्तम्॥ बालवृद्धातुरैर्विना॥
[illegible]॥ स्नानमेवं स्नानं॥ जो होमो

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

पदा उ(स्व)धरतीतिधर्मः ॥९०॥ वैशेषिकदर्शन अ(?) १ आह्निक १ में धर्मकाल क्षण होता है
(हेतुः) वाक्य धर्मः उपपत्ति प्रतीति प्रमाणिका हृदय अध्याय १ सूत्र

विधीयते ॥ म् चमानमवदानम् ॥ मु...
न विधीयते ॥ उपसर्पणे लक्षणरीत्या अहो
चन्द्र सूर्ययोः ॥ प्रणपकोटि उगरां मध्ये ॥ मु
कालो चन्न न कम् ॥ इतिकृष्ण सत्
आहरण महात्म निर्णयः प्रभाव समाप्त ॥

धियते अरवं प्राप्यते सेव्यते वा यो स धर्मः ॥
पत्तधर्मकाल दाराहै ॥ लक्षण श्लोक पि ॥ विहि
तकर्म जन्याद्गुणो धर्मः ॥ [redacted] ॥ ...
...दारणो उ(...)णो धर्मः विधि चः ...
...नै ॥ द्विविधो हि धर्मः प्रवृत्ति लक्षण
निवृत्तिलक्षणश्च ॥ धर्मेण पापमपनुदति
इति श्रुतेः ॥ स्त्रीयपति प्राप्त्य पति गण ...
...प्राप्तो वा ॥ पह भाष्य का स्त्री का लक्षण है ॥
वर्ति पथ्या... स्वपदार्थ स्वरूप ये यासु ...
...या ॥ यह विद्या का लक्षण है ॥ मातृ पति ...
...यो जीति माता ॥ यह माता का लक्षण है ॥ ...
विवेकवती बुद्धि परण पराङ्मुखा जागताऽस्य
...पण्डितः पण्डा बुद्धि रोदिवर्तः ॥ पह
त्वपण्डितः पण्डावधमोदावितपगडितः ॥ प
क्व पण्डित का लक्षण है ॥ व्याकरण के मत में उ
ह पण्डित काल दारणहै ॥ तार्किको मत
णहै स न वार्तिक भाष्य पह उ है ॥ प्रकरणाद
मे बौ ही ... श्रीमह मस्यप्रपञ्च ...
CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham
गीता अ० ४ में वीपण्डित का ... ह मार स्मा:
... विज्ञानात्मिन ... कर्मा णं तम्प्राहुः पण्डितं बुधाः

योगमस्य योगर्गः इसका अर्थ ली अर्थ यह है॥ शमीजो अरणी तिसका गर्भ॥ अश्व तिसका अग्नि का गर्भ रहन स्थान है रुप गर्भ तिसाहि रुप गर्भ कां अग्नि
रूप कृष्ण पुत्र तिसका पुत्र प्रमलोद तिसका लोद के द्वन्द प्रमे नि का सुन्ने
रुचे का तो विष्णु वेदर्चा ता से॥ यह अर्थ मन्त्र स्मृति में देखने का है॥
वैदान्त वालों को ४ प्रमाण माने हैं श्रुति १ गीता
२ व्यास सूत्र ३ अनभव ४ यह माने हैं॥ हिन्दु यह
वेद प्रमाण है॥ हिन्दु सज्ञान यह है कि देखो शब्द
है॥ हिन्दु स्य: [illegible] अमृतत्वे: तज्ज्ञान: हि
न्दु सज्ञान:॥ चोटवे धर्म का नाम हिन्दु है
पूर्व के प्रमाण यह है॥ हिंतो मे दय तो ति
मेंं नाम वालों का है यह है जो उप श्री
रामा [illegible] यसे लिखा है॥ सर्पवे कि चोद वे
इज्जवों की सज्ञान का नाम है हिन्दुस्तान
है॥ हिन्दु लीला नमः यास कहते है॥ शमी गर्भस्य
योगर्भस्य गर्भस्य योरिपुः रिपु गर्भस्य योगर्भो
नमो विष्णुः प्रसीदतु॥१॥ अर्थ इस कूट श्लोक को
यह है॥ [illegible] निकालें॥ अर्थ इस श्लोक का
[illegible]
[illegible]
[illegible] स्कंध स्वामि [illegible]
[illegible] तिस का [illegible] विघ्न: है स
[illegible]
[illegible]॥ [illegible] है॥ वाल्मीकि को स्पतिलिख
ते है वाल्मीक व पुराण वेध त्रै भागवत मे
औ और वाल्मीकि रामायण मे वाल्मीकि लिखे

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

वीको भ्रतिकासे सम शरीर ठका गयाथी
फेर वरुण देव को बहुत वर्षा करी सम भ्रति
का छोड गई थी इस वास्ते वाको कहते है ॥ दे
ग्र वे पुत्र से इंद्र को भी जीवती कहते है ॥ सन
कुमार को अवे वी लिखते है ॥ सनत् निर नेरवे
भूरुक गगड बाद प्रान्येति सनत्कुमारः ॥
अब राज नीति के श्लोक को वी लिखते है ॥ श्री
पुराणों के वी लिखते है ॥ पाद्मे माघ महा
॥ अवैष्णवो हतो विप्रो हतं श्राद्धम योगिनम्
अप्रकाशं तपो हतं दोषमु अनाचारं हतं कुलम्
मू ... हतो धर्मः क्रोधेनैव हतं तपः
॥ अदृष्टं च हतं ज्ञानं प्रमादेन हतं श्रुतम्
रूभंका हता नारी ब्रह्मचारी हतं साध्याः
दीप्ताग्नौ हतो होमो हता भक्तिरसात्त्विकी ॥
उपजीव्या हता कन्या स्वार्थे पाक क्रिया
तान्न प्रभिद्र हतो पागः कृपणाक्ष हतं धने
अनभ्यासे हता विद्या हतो राजा विरोध
कृत जीवनार्थे हतं तीर्थं जीवनार्थं हतं व्रतम्
असत्यात् हता वाणी तथा पैशून्य वादिनी
संदिग्धो हि हतो मंत्रः व्यग्रचित्तो हतो जपः
हतं अश्रोत्रिये दानं हतो लोके अश्रद्धा
प्रत्यकः अश्रद्धया हतं सर्वं पाकं पात्रं
... विधानेन ... ॥ अमन्हेयात

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

...मोगमस्त...
...तिस...
...त...

...को नरूपतिरूपेण तपः क्रोधेन न रूपति स्नेहेन दूर
वासेन शूद्रान्नेन द्विजोत्तमः ॥१॥ वेदोदधि
...प्रभृति शुभ्रस्त्र पाठको न चाति मूर्खो बहुरत्नस
...तः शु लोचनो चीण पटोपि शोभते न ने
...गुनः व नकाद्यत कृतः ॥२॥ हंसपभेदं पै शू
...र्यं परदो अत्र कौतनम्र कलहं परनिन्दां च दू
...तः परिवर्जयेत् ॥३॥ अप्रपचेन किं क्रूपणं हसा
...ते न तेन रूपेण किं भरणपरात्मो वकीते न
...त्रेणाकि व्यसनकाल पराङ्मुखेन रागेनह्नि किं
...रुण्डाग्धि कमतेरमो ॥४॥ ... न
...चैव नरवाना शस्त्रपाणि नां विश्वा... ना
...वकर्तव्यः स्त्री अप्रराजकुलेषु च ॥५॥ प्र
...तल महान च दुर्भिक्षे राष्ट्रविप्लवे ...
...जो बार रमशाने च यः तिष्ठति स बान्धव
॥६॥ तत्र देशे न वस्तव्यं यत्र नास्ति चतुष्टयं
चैटरणप्रदाता वैद्य श्रोत्रियः सजल
नदी ॥७॥ नमन्ति फलिनो वृक्षाः नमन्ति गु
णिनो जनाः शुष्कवृक्षश्च मूर्खाश्च न न
मन्ति कदाचनेति ॥८॥ दुर्जनो कालि...
...नि संधिमिच्छन्ति साधवः उत्त
मानं मिच्छन्ति मानो हि महतां धन
...विजिन दोष रद्धमेव शस्त्रपाणि दृ...

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

पद्म: चोत्र दार हर क्षेव षडेते आतता यि न:
१०॥ आततायिनो हंतव्य:॥ प द्विरण्य का ... छोडा ते
पशू नां चैव गर्भे: यतीनां कोप च्चा ... ता सर्वे
चारडाता ऽनेन स्य वा:॥११॥ ... रापभू मि ... ग्रा
मन्ने धासस्तोत्र नु घ्नं तं प्रति गच्छ नु प्र वि ...
मस्मी भवति त द्धोरागता यास्ववेतु उ पपि पा
त्र:॥१२॥ जरणानां वो ... स मन्त्रे का ग्र पाति खते
आरा जना मिति जरणानांस भू हानापाल के पि तृप
तिमु ह्यानां पालक वस्तु मात्रा ग्रत्य पा लक मु च्चा
... प्रह ग्र न्यत्रा सत स्या मे मरको करणा य मि
... प्र सु विनि धा जया नेति हवसो अर्घ ...
प्रकार क हवसो वं ममापि भया: ममर ...
ताहशो भया: आसवति: वा ग पं घेषु अर्घमा ...
ज ... कारकमु अर्घमन्त्र स्य पोषकं वा अजा ...
... ने ... वजा नन्ने तत्तो ... वा ... स्तुत्य व दे
... वि कारेगा सार ... कर्मो त्पादना र्थे प्रवर्ते यानि
गर्भ त्रिनं दधाति ... पोषणा च्चेसर्वपो षकं वा
ति अभीष्ट फलं द गर्भो भीष्टफल मु आसवति:
वं गर्भ धं अजा सि यामि प्राधु नि वा गर्भं अर्घ मो
त्र स्य कर्म चितु: ष य स्य वाज न क मु भावनि ...
धम्मु जनकत्व मिति प्रजगाति दुं पणा पा: ...
द्व डाप विति छं दसि व हुलमिति ला यस्य य ...
अर्घ मन्त्र मे रणा पाक्र कर्मो त्य त्तो भवति इति ता ने ...

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

ो: तनागे कर्म कारणं ॥ ततो गणपातनं अपा
प्रवासे ~~ततो~~ ततो निक्षिपा
नन कारणं। एभ्य आमतो निष्प्राणं सुरी यमु ॥
द्र मा प्रेतो ॥ २ ऐषेव मे हतो मैत्रे चितं मार्गे ॥ इति श्री
स्मृति पुराणा गंगा प्रसिद्धार्थः ॥ प्रत्न ॥
ध्यस्याः ॥ विर्चिसेनरः कुलीनः स्वपापैः संप
दानं एणन्तः स्रव वेला च दर्शनी ॥
सर्वे तीर्थ काँचन मानं पनि ॥१॥ जाप्यी दर्श
ने ५ श्ची याऽन्ने क वासाना सोऽस्पतः ॥ पक्षवाक्य प्र
॥ प्रथमान परिभाषा ॥ तोला लिखते है
है ॥
मानेन विना प्रोक्ति द्रव्याणां जायते कचित् अतः प्र
आप्सीर्थ मानमन्त्रो च तमया ॥ १ ॥ चरकस्य
तं वैधराधैर्य स्मा मतं ततः विहाय सर्व मानानि
मागधमानमच्यते ॥ २ ॥ त्रसरेणु बुधैः प्रोक्तः
त्रिंशता परमाणुभिः त्रसरेणुस्तु पर्यायनाम्ना वंशी
निगद्यते ॥ ३ ॥ जालान्तरगतैः सूर्य करैवंशी विलो
क्यते षड् [illegible] वंशीभिर्मरीचि स्यात् ताभिः षड्भिश्च
राजिका ॥ ४ ॥ ज्येष्ठे मासे सितपक्षे प्राप्ते प्रति
पत्तिथिम् दशादिने नरः स्नात्वा दशाश्वमेधजं
फलम् ॥ ३ ज्येष्ठ मे त्व दशम्यां तु गंगाजन्म सा
ध्या व्यापिनी ग्राह्या ॥ ज्येष्ठे मासे सितपक्षे
दशम्यां बुधहस्तयोः व्यतिपाते गरानन्दे कन्या
न्द्र वृषे रवौ दशायोगे नरः स्नात्वा सर्वपापैः प्र
मुच्यते ॥२॥ ज्येष्ठप्रभृतौ कार्तिकान्तं [illegible] गे ता

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

सापुरुषताग्राचा ॥ अस्यामेव फलं तीर्थ
म्हतं उदककुंभदाने महाफलम् ॥ क्रीडातः
से ऽश्वमेधफलम् ॥ अथ संकल्प ... श
कालो संकीर्त्य ॥ अमुकगोत्रोऽहं अमुकशर्माऽहं ॥
वर्माऽहं गुप्तोऽहं वा अमुकरारोऽपवद्ध्यर्थमुच्च
निर्जतपोषित्येकादशीफलताडु चेन
इदं व्यंजनशर्करापलादक कुंभदानम
केरिष्ये ॥ १ ॥ ततो प्रार्थना ॥ देवदेव जगन्ना
थ संसारार्णवतारक। गतोकुंभप्रदानेन
मम पापं व्यपोहतु ॥ इस विधान से कुंभदा
न करना ॥ इति निर्णयः ॥ समाप्तः श्री
कार्यं चानि णपरिछे ग्रंथ लिखितं म ॥ ...
हितोपदेशे राजनीतौ ॥ कः विवाहे व्यसने रि
पुदोषपस्करे कर्मण्युपि मित्रसंग्रहे प्रियो
पुत्रे रोषबधनेषु बांधवेष्वपि तिव्यो नास्ति
नराधिपोऽह्यत्र तु ॥ अर्थ ॥ पशुके विषे ॥ विवाह के वि
षे ॥ दुःख के विषे ॥ शत्रुके नाशके विषे ॥ प्रियनारी के विषे
॥ निर्धन भाई के विषे ॥ पशुके करणेवाला जो कर्मीति
सके विषे ॥ मित्रमित्र तापके विषे द्रव्यका लगाव
नावधान नहीं है ॥ मंदा विदधाति निंदां निपुणाग्र
स्वपादसेवनम् तनुते मंडूक धरट स्वपि
धुपः सरसि जरसं न सं त्यजंति ॥ अर्थ ॥ मंद पुरुष
निंदा वे ... देव कालधारण करते है ॥ निपुण

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

चातु [illegible] पुरुष है वोह हरि पादसेवन को ग्रहे करते है ॥
मंडूक जो पिंडक है तिन्हों को विशेष रटन करते हुवे भी
[illegible] पद्मा [illegible] गर है कमल रस को कदाचित भी नही
[illegible] ते है ॥ यह वाक्य राजनीति का है ॥ साधवों को
[illegible] है सो भागवत में वर्णित करि है ॥ साधूनां दर्शन
पुण्यं तीर्थभूता हि साधवः तीर्थी कुर्वन्ति तीर्थानि स्वा
न्तस्थेन गदाभृता ॥ १ ॥ न ह्यम्मयानि तीर्थानि न दे
वा मृच्छिलामयाः ते पुनन्त्युरुकालेन दर्शनादेव सा
धवः ॥ अत्र साधवः स्थावरतीर्थकृतः नानाद्यर्थाः
[illegible] तीर्थ किसको कहते है ॥ स्थावरतीर्थ [illegible] हा [illegible]
[illegible] र्थादिरूप तो अपूर्ण सत्यावती [illegible] जो
[illegible] अग्निके कुरु पांडु पुत्रः न [illegible]
[illegible] चान्तरात्मा ॥ १ ॥ अद्भिर्गात्राणि शुध्यन्ति [illegible]
सत्येन शुध्यति ॥ अथ आचार्यलक्षण ॥ [illegible]
चार्यत्वं नाम किं ॥ आचारं ग्राहयेद्यस्तु [illegible] आ
चार्य इतीरितः ॥ आचार्यो वेदसंपन्नो विष्णुभक्तो
विमत्सरः मंत्रज्ञो मंत्रभक्तश्च सदा [illegible]
[illegible] ॥ सत्संप्रदाय संयुक्तो ब्रह्मवि [illegible]
[illegible] साधनश्चैव तथा नन्य प्रयोजकः ब्राह्मणो
वीतराग श्च क्रोध लोभ विवर्जितः ॥ सद्वृत्तो
[illegible] सिता चैव मुमुक्षु परमार्थवित् ॥ एवमादि [illegible]
[illegible] तः [illegible] चार्य स उदाहृतः ॥ १ ॥ शिष्यत्वं नाम किं
[illegible] तत्वाचार्य पराधीनस्तद्वाक्यं श्रूयते [illegible]
[illegible] वृत्ति श्च शिष्य सद्भिरुदाहृतः ॥ एवं लक्ष
संपन्नशिष्यं सर्वज्ञ अन्वितम् अध्याय [illegible] धीं

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

...षिता पथ आपस्त ... ... इत्यादि का नाम क लक्षणांश है ॥१०

नउ तस्योनिर्धते ... ...
विष्वक्‌चिसेना यस्य सः विष्वक्सेनः

नमो नारायणं ... ... ॥ पदवाक्यप्रमाणः ...
... ग्रंथ का है पत्र १६ वा ७ पर है ॥ विश्वक्सेन का
लक्षण लिखते है ॥ विष्वक्सेन जाको श्री विष्णु ...
तिसका पत्र विष्वक्सेन हुये अवतार रूप ...
भगवत स्कंध प्रथम में लिखा है ॥ अथ वेदस्याङ्ग वि
भाग ... छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते ॥ शि
क्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम् तस्मात्सा
ङ्गमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते पदवाक्य पाणि ...
... ... भे लिखा है ॥ कुल नाम ... [illegible]
... ... ॥ मुखं व्याकरणं जो शब्दविद्या लक्षणा ...
मीमांसा शास्त्र है सो हि ज्योतिर्नेत्र प्रकीर्तितः
... ॥ आपवेद पदक्रमदेवं धनुर्वेद अथर्वस्य ...
आयुर्वेद रसना विद्युपनो वैशेषिकं स्मृतं सांख्य ॥
... ... रहकारो न्यायवादः प्रकीर्तितः वेदान्तं तस्य
... ... स्यापि महात्मनः ॥१॥ पिङ्गल नाम ...
का है ॥ अथ व्याख्या का अर्थ लिखते है ॥ अथ्वेतिव ...
इति अथ व्याख्या ॥ अधोक्षज का अर्थ ॥ अधः ...
... यते जातु यस्मात्तस्मादधोक्षजः इत्यमरः ल ...
... ... ॥ पक्ष अथ दात् इन्द्रियात् जायते अप
... ... अमू ॥ पक्ष अधो ... यस्य सः अधोक्षजः ॥ पक्ष अ
... अस्य द्वारा ज्ञानं यस्य सः अधोक्षजः ॥ ... ...
... न्द्रियजन्य ज्ञानं यस्य सः ... ... ॥ भारतेऽ
... तु नव ... व्याकरणा ... विस्तृति ... ... ॥
... ... इतो धनं प्राप्ति ॥ अपर्णी स्तुति अपरे
... पाठ ... ॥ ... ... को ॥ ॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

गाद्काफल तै तजाग जेरा ज्ञ विड सज धाम हार..
विख्याता तिथ्य ददेहो एग वासिनः १ सारस्वताको

ः सखती पे स्नातो भवति मास्युजं जा कन स्व
नेऽप एपा कुरु क्षेत्रे सरस्वती ए कापि सातै
धाम्न चा गंगा यमुना सरस्वती तासां प
यजमा व पे कुवे ति विमो हिता : ते वा कम्
मुत : सिद्धि जो यते पाप कर्मणा मन ॥ त्रि
गा सारस्वतं तो पे समाहि नतु याम नं न
सर्व हदशमि मो से जं जा वृषे गुजो व्याति
तंत्र शास्त्रे पि ॥ यस्तु सम्य च सार भक्त्या पि दे
सारस्वतं जलानु गद्य पद्य मपि भाषी ते
चवृक पूजा यते ॥ तपश्च जो वृक्ष ल गा यत्री
रु मि जि को सर स्वतीं प्रदर्शनस्य जननी मु
दे दि को चारु वि सार मु ॥ सरस्वती जी
ब्रह्म सारस्वत हुवे दधीच ऋषि पिता हु
सर्व वाह सारस्वत प्रष्ठ व श है जब्बा हो
सराड १ ॥ शोरी रा ॥ जोषी ३ ॥ पाठक ॥ ६ ॥ राजे
सर धजी ५ ॥ तिवाडी ॥ ७ ॥ भरद् सीच ८ ये
सार्व द्वजो ९ ॥ तिवाडी ॥ ७ ॥ भरद्
ह प्रष्ठ वंश है ॥ खत्री वी ३ तरह को है ॥ मे
दि चे १ कष्ट पे खन्ने ३ गंज रुगी से कोई को
रुक होते है निकाश हुवा सारस्वत खत्री यह
प्रष्ठ वंश जि तनी वार्ता यह लिखि है सो
जम लोकिक है ॥ शास्त्र मे कोई स्त व
ानो ते स्व न ही है केवल श्री सर ए ग ग

...वा जोग मे थि तु उ क लाप त्र गोडे ति वि...
...वि क्षो तर नि वा सेतु
...नि महाभारत मे लिखे हैं गदा पर्व मे
...र स्वती कीउ स नि वडेकु रु दो नम ... मैं
...नी उत्पत्ति लिखि है ॥ प्र लम्॥ अथ अर्थ यातु

...न के वा द्वितीयं त्र जोति रूप ते ॥ न द्वितीय स्या वि
...द्य चरणं ॥ समास पृथि क द्यु न्या च प्र द्वितीय
...मु ॥ और भी त हेगा शब्द स्तोम महा
...नि धि कोश मे लिखा है ॥ न द्वितीयः स
...शो यस्य सोऽद्वितीयः ॥ प्र द्वैत दीन...
...निं ॥ द्विधा इतं भेद गत द्वीतं तस्य भावः
...त्य नास्ती यस्य सोऽद्वैतम् ॥ दास का
...॥ शब्द स्तोम मे लिखा है ॥ दास पते ही
...सो भकार्दि दासः घञ् प्रत्ययान्तो है
यते ऽसौ भक्ता ... ततः सेवके ॥ भक्त
...ऐसे सब के च भाति ...
...भाम दास का है ॥ भक्तेन प्र न मात्र ना मेन
दासः ... कृत दासभावः पञ्च दश दास
...गति दास भेद भक्त दास ... विशेषः इति
...तिः ॥ यह वाक्य शब्द स्तोम महानिधि कोश
मे लिखा है ॥ प्र लम् ॥ अमर कोश मे जो दास शूद्र
...लिखा है सो वेह दंश दशने धातु से दास पद
केवर्त कि धीवर ते लिखा है ॥ ...
है ॥ दासृ दाने धातु से दास पद होता है ॥ इस का अर्थ
शब्द स्तोम कोश मे भी लिखा है ॥ और भी बहुत प्रमाण
जि० है ॥ दास ते आत्मा ने वि श्री रामा ति ... दास
यह दास का अर्थ है ॥ दासोहं कोशलेन्द्रस्य राम
स्या ... कर्मणः हनुमान शत्रु सैन्या नाति ...
...हे वाक्य महाभारत मे दास पद का ... रामायण ...
लिखे हैं ॥ ...

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

रा॰ सुन्दरकाण्ड सर्ग ४२ मे पह वाक्य है।
…हे कोश लेन्दुस्येति ॥

आस्तिक नास्तिक का अर्थ भी पहहै ॥ अष्टाध्यायी के सूत्रसे ॥ सूत्र पहहै ॥ अस्ति नास्ति दिष्टं मतिः ॥ भाष्य ॥ अस्ति परलोक इत्येवं मति र्यस्य स आस्तिकः ॥ नास्ति परलोक मति र्यस्य सः नास्तिकः ॥ इस सूत्र के प्रमाण से पहल हाणा लिखे है ॥ अष्टाध्यायी॰ अ॰ ४ पा॰ ४ सूत्र ६०

…जोध्यता व सुमती सलिले निमग्ना नग्ना च पाण्ड व वधूः … यापि ता दूकूलैः संमोचितो जलचरस्य प्रसाद गजेन्द्रे इज्जो चेरो भवतु मेघस दीन वन्धुः ॥ १ ॥ इत्य म… ला चरण का श्लोक का लुराम कृत … रण मे रह … ता मे से लि॰ है ॥ नीलाम्बुज श्यामल कोमलाङ्गं सी… ता समारोपित वाम भागम् पाणौ महा शायक चारु चापं नमामि रामं रघुवंश नाथम् ॥ २ ॥ सजातजल … नीलंप्र शीतोदर श्री तं करतल ध्व तशैल वे ण्वा … धी रश्या लं वजज ने कुत्त पातं कामिनी केलि लोलं … तन्द्दण तुलस्थिमालम् श्रौमि जोपालबालम् ३ ॥ …

यंत्र वीसका है ॥

६	२	४	५	६
३	६	८	३	ह
६	५	१	८	वी
२	१	१	४	सका यंत्र है

मंत्र पहहै ओं क्रों त्रिं त्रैं त्रैं त्रौ त्रः इस मंत्र के इस यंत्र के ऊपर लिख के आटे की १०१ जो ती … वण करके जल मे गेर देने से … मनोवांछित फल … प्रापत होता … यह … वी है …

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

धर्मसिंधु पृ. २ पत्र
४५ राज्ञां पद्दाऽभिषेके
क्रोष्ट्रोऽपि वीरूपामी
नवाहा नत अपराजि
तापूजने अपराजिता
पूजने तु नवमीयुता
दशमी ग्राह्या ॥

निर्णयसिंधु में पत्र २०० पर
त्रिविक्रमीय देवस्य पर वाक्य
नवरात्रि में लिखे हुए है
पृ. ३१ ५४

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetha

तीथि:श्रारीरं तिथि रेवज्ञ
रतं तिथि: प्रमाणं ति
थिरवसाधनं मिति २
यह वीवाचप पृ: ६५
पर है निर्णयसिं:

मुहूर्तमात्रसे जो उ
न होति तिथि: सो वो
ह उदय तिथिन
ही मानी जाती है
मुहूर्त मात्र हो
२ घडी भी हो तो वो ह
उदय तिथि: मानी जा

C-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peeth

21

तिथीन्त्रे रोपः
ॐ प मे पत्र १०
पर लि. है
कमलो करस्तु
हे ऽ पिनव मी पते
जरा होती० ५६ लि.
दोनो पत्रो की है

Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharad

नवमांयक करतो

ਨਧਮ.ਕਾਬਿ
ਸ੍ਰੀ ਗੁ:ਸਿਖੇ
ਰ

adur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya S

आ वण भद्र... रामिकु लधर्मादे
त्रिमू तेसाम... आपाधूर्वविद्धेव
गा हा॥ पत्र... परिच्छे०२ [illegible] समपेपि
चैषादिहानीम... तदापिदू वी [illegible] गाह्य॥
प०२०१२हे प[illegible]वेध

हस्तनक्षत्रे स्थेसूर्ये नचात्युत्तानमाहु गजछाया
सा गीताप०२ पत्र ३५ पर गजछाया धर्मे है
हस्तानक्षत्रे सूर्या रात्रिंश्च हस्तानक्षत्रे ... ता ऽस्मा
कस्या गजछाया पत्र ३६

गजछाया

आश्विने कृष्ण पक्षे तिथिमार्द्र विद्धा ग्राह्या
कृत

वेधोपि द्विविधः अरुणोदयेदशमीवेधः सूर्यो
दयेत द्वेधश्च सूर्योदयात्प्राक्चतुर्घटिका समकोऽरुणो
दय ... सूर्योदयास्तु स्पष्ट॥ षट्पंचाशत्घटिकानंतर
दश ... अरुणवेधो वैष्णव विषयः
कलामात्रदशमी अरुणवेधो ... दशमी
षष्टिघटिकात्मक सूर्योदयोत्तरं पलामात्र दशमी
सहे सूर्योदयवेधः स्मार्त विषयः

३.b. [illegible]
[illegible] प्रथमभागः प्रातः कालोदय ...
दिनेषु धाविभज्य प्रथमभागः प्रातः ...

स्वस्व निवृत्तिपूर्वक परस्पसाद नेदानम्
व्रतस्यं ... कृत्वा ... कर्मविशेषा कृतम्
अतो रात्रे भोजनाभावः उपवासः धर्मसिंधु०पृ

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

धर्मसिंधु प॰ २ पत्र ८३ माघ १४ परा
पौर्णिमा की ग्राह्य देव भेव होलिका
फा॰ शु॰ १४ पूर्वविद्धा प्रदोषव्यापिनी ग्राह्य

मार्गशीर्ष १४ प्रदोषव्यापिनी ग्राह्य पूर्वविद्धा
~~ग्राह्य~~ यह तो दिन प्रदोषव्यापिनी हो वा पीछे
तो दिन हो तो प्रदोषव्यापिनी ग्रहण करनी
प॰ ५१
कार्तिक शु॰ १४ पौर्णिमा की ग्राह्य पक्ष
५६ ~~उपोषितैर्भक्तैर्भूतचतुर्दशी पूर्वविद्धा यह तो दिन ... तो काल ... पत्र~~

चै॰ १४ परा ग्राह्य प॰ ५ वै॰ शु॰ १४ परा
ज्ये॰ शु॰ १४ चतुर्दशी विद्धा ग्राह्य पूर्वविद्धा
का॰ फा॰

उपवास व्रते तु पूर्वा ग्राह्य परि॰ २
प॰ ११

चतुर्दशी का प्रथम दश घटि
का जो वेध है सो व्रत दानादि प
र रहे है न तु उपवास पर इति उपवा
स में नहीं है

आषाढ १४ प्रदोषव्यापिनी ...
पत्र १४ पर ... ग्राह्य
... तिथि का व्रत ... ४ पर ...

पृ॰ ५८ ... (left margin, vertical)

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

धर्मसिंधु प.२ पत्र ११ अत्र चौर्य
कासी निर्णय प्रकारे। तत्र
कालिनाडू को राम पाल्ह वे त्रि
मुहूर्ताधिका व्यापिनी चतु
र्दशी विद्वग्राह्या॥ त्रिमुहू
र्तन्यूनत्वे परैव॥ मृतोऽमा
दर्शनाडी मिहूं प्रवर्तते उत
सा तिथि इति वचनं सावित्रीव्र
तातिरिक्तं ज्ञेयं॥ सावित्रीव्रतो
पवासे ऽष्टादशनाडी विद्धामा
ऽपि ग्राह्या लोकात्॥ यत्तु केवल
रजनामकमपवासर
हितं सावित्रीव्रतं सर्वेनापि
प्राप्नोति श्रेति॥ तत्र मृता
वादर्शति वेद्याततदानादि
परो न तूपवासपरत्वात्
ति निर्णयसिंधु लिखित मा
धवाशयानुसारेणामा
दर्शनाडी चतुर्दशी सर्वेव परैव
पूजाव्रतेषा च॥ उपवास
व्रते तु पूर्वैव मम प्रतिभाति
?अत्र पारणं पूर्णिमांते कर्तव्यम्

रजस्वलादि दोषे पूजादिना
दानं द्वारा कार्यम् स्वयं उ
पवासादिकं कार्यम् धर्म
सिंधु प.२ पत्र ११
पहले में वाक्य इसी का
CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham
पी में तो रखी ये है

32

0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peet